बिहार सरकार

Catch-Up Course

सेतु सामग्री

कक्षा–VII & VIII

विषय–सामाजिक विज्ञान

सहयोग– बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, बिहार

अकादमिक सहयोग– यूनिसेफ, बिहार

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार, पटना द्वारा विकसित

शिक्षकों के लिए निर्देश

आप सभी अवगत हैं कि पिछले लगभग 10 माह से कोविड 19 के कारण विद्यालयों में बच्चों का पठन–पाठन सहित अन्य शैक्षणिक कार्य बाधित रहा है जिसके कारण उनके सीखने की प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न हो गई है। इस लंबे और त्रासद अंतराल ने इस दौरान सीखने के अपेक्षित अवसरों को, खास कर विद्यालय में, कम कर दिया जिसके कारण बच्चों में Learning Loss या Gap बढ़ गया है। अतः ये आवश्यक और अपेक्षित है कि इस Learning Loss या Gap को कम किया जाय। शिक्षा से जुड़े विभिन्न हितधारकों से व्यापक विचार–विमर्श के उपरांत राज्य स्तर पर यह निर्णय लिया गया कि बच्चों के सीखने सिखाने की प्रक्रिया को गति प्रदान करने और उनमें अगली कक्षा की दक्षताओं के प्रति तत्परता उत्पन्न हो सके, इसके लिए अगले तीन महीनो के लिए कोविड काल से सम्बन्धित कक्षा के लिए, अधिगम प्रतिफलों के आलोक में विषय वस्तु को इस तरह तार्किक और संतुलित रूप से कम करते हुए प्रस्तुत किया जाय कि Learning Loss या Gap को कम किया जा सके। इसके लिए तीन माह का Catch-Up-Course विकसित करते हुए पाठ्य–पुस्तक से उन सामग्रियों/विषय वस्तुओं/गतिविधियों की पहचान की गई जिनके माध्यम से बच्चों के Learning Loss या Gap को कम करते हुए अपेक्षित अधिगम प्रतिफल सुनिश्चित कर उन्हें अगली कक्षा के लिए तैयार और तत्पर किया जा सके। वस्तुतः चिन्हित सामग्री/विषय वस्तु/गतिविधियां, क्रियाकलाप तथा शिक्षण रणनीति पूर्व और अगली कक्षा के लिए सेतु का कार्य करेगी।

वैकल्पिक शैक्षणिक कैलेंण्डर के अंतर्गत Catch-Up-Course और चयनित विषय वस्तु के आलोक में बच्चों में अपेक्षित अधिगम प्रतिफल सुनिश्चित हो सके इस हेतु निम्न तथ्यों को ध्यान में रखा जाना अपेक्षित है।

–कोविड– 19 की सुरक्षा से सम्बन्धित सभी विभागीय निर्देशों एवं प्रावधानों का पूर्णतः सावधानी से अनुपालन किया जाए।

– Catch-Up-Course कुल 60 दिनों के लिए विकसित किया गया है।

– चयनित विषयवस्तु में सामाजिक विज्ञान (इतिहास, भूगोल, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन) की पाठ्य–पुस्तक 6–7 के पाठ लिए गए हैं। कक्षा 6–7 के बच्चे जो सत्र 2021–22 में कक्षा 7–8 में पढ़ रहे हैं, उनके लिए तीन महीनों का Catch-Up-Course है।

–चिन्हित पाठों से सम्बन्धित अधिगम प्रतिफल या सीखने के प्रतिफल Catch-Up-Course के सम्बन्धित पाठ के साथ दिये गए हैं।

– सभी चिन्हित पाठों के लिए अधिगम संकेतक दिये गए है जिनके आलोक में बच्चों में अधिगम सुनिश्चित किया जाना अपेक्षित है।

– पुनः सभी पाठों के साथ बच्चों में सहज अधिगम सुनिश्चित किए जाने को ध्यान में रखते हुए उससे सम्बन्धित कुछ सुझावात्मक प्रक्रिया दी गई है जिनका उपयोग कक्षा कक्ष प्रक्रिया में किया जा सकता है। ध्यान रहे ये प्रक्रिया मात्र सुझाव है न कि अंतिम। आप पाठ से सम्बन्धित नवाचारी प्रक्रियों का उपयोग करके अपनी प्रस्तुति को और भी सुगम बनाते हुए बच्चों के सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को सहज और आकर्षक बना सकते हैं।

–सुझावात्मक प्रक्रिया के अंतर्गत पाठ से सम्बन्धित गतिविधियां, क्रिया कलाप और तालिकाओं की चर्चा की गई है जिन्हें कक्षा कक्ष में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में शामिल किया जाना अपेक्षित है जिससे बच्चों का सीखना सुनिश्चित हो सके और अधिगम प्रतिफल की संप्राप्ति हो सके।

– सुविधा के लिए प्रत्येक पाठ से संबन्धित गतिविधियों, क्रियाकलाप और तालिका से संबन्धित पृष्ठों को भी अंकित किया गया है।

–पुनः सभी चिन्हित पाठों से संबन्धित सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को पूरा करने के लिए संभावित दिनों की संख्या भी सुझााई गई है जिसे ध्यान में रखा जाय।

– सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों को बातचीत करने, अपने अनुभवों को साझाा करने और जहां तक संभव हो स्वयं से कर के सीखने का पर्याप्त अवसर दिया जाना अपेक्षित है। इससे बच्चों को कोविड 19 के कारण हुए विविध आघात (Trouma) और संबन्धित दुष्प्रभावों से बाहर निकालने में मदद मिलेगी, बच्चे सहज हो सकेंगे, विद्यालय, कक्षा और अपने सहपाठियों के प्रति भी सहज हो सकेंगे।

– यह ध्यान रखा जाना आवश्यक है कि बच्चे पूरी शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में मानसिक और शारीरिक रूप से सहज बने रहे। सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया और विद्यालय वातावरण दवाबमुक्त हो।

निदेशक
(गिरिवर दयाल सिंह)
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
बिहार, पटना।

शैक्षणिक सत्र 2021–22 के लिए तीन महीनों की सेतु सामग्री (Catch-up Course)

कक्षा – 7 (कक्षा – 6 के बच्चे जो सत्र 2021–22 में कक्षा–7 में पढ़ रहे हैं, उनके लिए 60 कार्य दिवसों की पाठ्य सामग्री)

विषय :– सामाजिक विज्ञान (इतिहास) अतीत से वर्तमान – भाग – 01

समान अधिगम प्रतिफल के आधार पर पाठों को समायोजित कर कार्य दिवसों के आधार पर विभक्त किया गया है। मूल पाठों की संख्या 14 (चौदह) है जिसे समायोजन के पश्चात 9 (नौ) अध्यायों के अंतर्गत रखा गया है।

अधिगम प्रतिफल	क्रम संख्या	पाठ क्रम संख्या	पाठ का नाम	अवधि
विभिन्न प्रकार के ऐतिहासिक स्रोतों, उसके प्रकारों तथा उसके महत्व को समझाना।	1.	2	क्या, कब, कहाँ और कैसे?	2 कार्य दिवसों में
प्रारंभिक मानव जीवन, संस्कृति एवं उसमें हो रहे बदलावों और उनके विकास को बताना।	2.	3 4	प्रारंभिक समाज प्रथम कृषक एवं पशुपालन	3 कार्य दिवसों में
धातु युग की समझ, नगरीय सभ्यता (सिंधु घाटी सभ्यता) की विशेषता को स्पष्ट करना।	3.	5	प्रारंभिक शहर : प्रथम नगरीकरण	3 कार्य दिवसों में
वैदिक संस्कृति की विशेषता को समझाना। लोहे के उपयोग के बाद मानव जीवन में होने वाले बदलावों को बताना।	4.	6 8	जीवन के विभिन्न आयाम नए प्रश्न : नवीन विचार	3 कार्य दिवसों में
आरंभिक राज्यों के राजनैतिक– भौगोलिक स्थिति को बताना। मौर्य साम्राज्य की राजनीतिक, इतिहास, प्रशासन एवं अशोक के कार्यों को समझाना।	5.	7 9	प्रारंभिक राज्य प्रथम साम्राज्य	3 कार्य दिवसों में
मौर्योत्तरकालीन आर्थिक स्थिति को बताना। संगम काल की समझ विकसित करना।	6.	10	शहरी एवं ग्राम जीवन	1 कार्य दिवस में
बौद्ध धर्म के विदेशों में प्रसार एवं भारत की सांस्कृतिक प्रसार को बताना।	7.	11	सुदूर प्रदेशों से संपर्क	1 कार्य दिवस में
गुप्त साम्राज्य एवं अन्य राजवंशों के राजनैतिक इतिहास से परिचित कराना।	8.	12	नए साम्राज्य एवं राज्य	2 कार्य दिवसों में
संस्कृति एवं विज्ञान के क्षेत्र में भारत के महत्वपूर्ण योगदानों को बताना।	9.	13	संस्कृति और विज्ञान	1 कार्य दिवस में
		पुनरावृत्ति	.	1 कार्य दिवस में

शैक्षणिक सत्र 2021–22 के लिए तीन महीनों की सेतु सामग्री (Catch-Up-Course)

कक्षा – 7 (कक्षा – 6 के बच्चे जो सत्र 2021–22 में कक्षा 7 में पढ़ रहे हैं, उनके लिए 60 कार्य दिवसों की सामग्री)

कक्षा - 7 विषय-सामाजिक विज्ञान (इतिहास)

सीखने का प्रतिफल	अध्याय	अधिगम संकेतक	सुझावात्मक प्रक्रिया	अवधि
Learning Outcomes	Chapters	Learning Indicators	Suggestive Process	Duration
• स्रोतों की पहचान एवं विविध प्रकार के स्रोतों में अंतर करते हैं। • ऐतिहासिक स्रोत का विर्णन अपने शब्दों में करते है। • मानचित्र के आधार पर भारत की भौगोलिक, राजनैतिक सीमाओं की पहचान करते हुए ऐतिहासिक पुरास्थलों को अंकित करते हैं। • भारत में आरंभिक मानव बस्तियों को मानचित्र के माध्यम से पहचान सकते हैं।	**क्या, कब,कहाँ और कैसे? (अध्याय–2)**	• ऐतिहासिक स्रोतों और उनके विविध प्रकार तथा महत्व की समझ है। • इतिहास की परिभाषा जानते हैं। • देश का नामकरण कैसे हुआ, इससे संबंधित ऐतिहासिक एवं पौराणिक कथाओं की जानकारी है। • नदियों के किनारे सभ्यता के विकास के कारणों को जानते हैं।	• भारत के प्राचीन मानचित्र का अवलोकन एवं उसपर स्थलों को चिन्हित करना। (शिक्षक द्वारा) • पाठ्य पुस्तक में दी गयी अवधारणाओं का समूह में विश्लेषण करके सिखाना (शिक्षक–छात्र) • पुराने समय की परंपराओं से वर्तमान में क्या अंतर है, उसको जानने का प्रयास कर सकते हैं।	2 कार्य दिवसों में
• आरंभिक मानव की जीवन शैली एवं उनके द्वारा उपयोग में लाई गई भौतिक सामग्रियों की पहचान करते हैं। • प्रारंभिक मानव–संस्कृति एवं	**प्रारंभिक समाज (अध्याय–3)** **प्रथम कृषक एवं पशुपालन (अध्याय–4)**	• आरंभिक मानव एवं उनके भोजन स्रोत्र को जानते हैं। • आरंभिक मानव की जीवन शैली के साथ अभी के जीवन शैली में	• स्थान विशेष का पाठ्य–पुस्तक के आधार पर अवलोकन एवं विश्लेषण जैसे–पैसरा (मुंगेर), चिरांद (सारण), मेहरगढ़ (पाकिस्तान) • मानचित्र अवलोकन कर	3 कार्य दिवसों में

उसमें हो रहे बदलावों और उनके विकास को समझते हैं।		आए बदलावों को बताते हैं। • आग के आविष्कार का महत्व समझते हैं। • आरंभिक मानव और नवपाषाणकालीन, मानव के जीवन में आए परिवर्तनों को बताते हैं। • खेती की शुरूआत एवं उसके कारण मानव जीवन में बदलाव की समझ है।	ऐतिहासिक स्थलों की पहचान कर सकते हैं। (शिक्षक–छात्र) • पाषाणकालीन भौतिक वस्तुओं एवं औजारों का अवलोकन एवं उसमें अंतर करना (शिक्षकों के माध्यम से) • आरंभिक कृषि के तरीके एवं उनके औजारों की तुलना वर्तमान समय के कृषि एवं उसके औजारों के साथ (छात्र द्वारा) करना। • आरंभिक मानव के भोजन सामग्री की सूची बनाना एवं आज के भोजन सामग्री के साथ तुलना करना।	
• धातु युग की समझ है। • नगरीय सभ्यता की विशेषताओं विशेषकर सिंधु घाटी सभ्यता का विश्लेषण करते हैं। • मानव संस्कृति सभ्यता अवस्था में कैसे प्रवेश करती है इसकी जानकारी है।	**प्रारंभिक शहरः– प्रथम नगरीकरण (अध्याय–5)**	• सभ्यता की समझ है। • धातु युग की विशेषताओं एवं इसमे होने वाले परिवर्तनों को समझते हैं। • सिंधु घाटी सभ्यता के स्रोत की समझ एवं जानकारी है। • हड़प्पा सभ्यता के नगर नियोजन, भवन निर्माण, सड़क निर्माण के बारे में जानते हैं। • हड़प्पा सभ्यता के नगर प्रशासन एवं नगर	• मानचित्र का अवलोकन करते हुए हड़प्पाई स्थलों का पहचान करवा सकते हैं। (शिक्षक द्वारा) • नवपाषाणकालीन संस्कृति के साथ हड़प्पा संस्कृति का अंतर कर सकते हैं । • विश्लेषणः धातुयुग एवं पाषाणकाल का। (शिक्षक द्वारा) • वर्गीकरण : हड़प्पाई वस्तुओं का उसके प्राप्ति स्थल के साथ। जैसेः– देवी–देवता, पशु एवं फसलों (छात्र द्वारा) • चर्चा : हड़प्पा सभ्यता के पतन एवं परवर्त्ती सभ्यताओं के साथ	3 कार्य दिवसों में

		नियोजन की तुलना आज के शहर से करते हैं। • सिंधु घाटी सभ्यता के स्थलों की खोज वर्ष एवं खोजकर्ता को जानते हैं।	संबंधों पर। (शिक्षक द्वारा)	
• वैदिक संस्कृति की विशेषताओं एवं वेदों की महत्ता से अवगत हैं। • प्राचीन काल के विभिन्न धर्मों, विचारों, संप्रदायों के सिद्धांत एवं जीवन दर्शन का विश्लेषण करते हैं। • लोहे के उपयोग के बाद मानव जीवन में होने वाले बदलावों को जानते हैं।	**जीवन के विभिन्न आयाम (अध्याय–6)** **नए प्रश्न : नए विचार** **(अध्याय–8)**	• वैदिक संस्कृति की जानकारी है। • चारो वेद एवं अन्य वैदिक साहित्य की जानकारी है। • सप्त सैंधव क्षेत्र एवं गंगा–यमुना दोआब की भौगोलिक समझ है। • वैदिक धार्मिक विश्वासों की तुलना आज के धार्मिक विश्वास से करते हैं। • वैदिक शिक्षा व्यवस्था की तुलना आज की स्कूली व्यवस्था से करते हैं। • महात्मा बुद्ध एवं महावीर जैन के बारे में जानते हैं। • लोहे के उपकरणों एवं उसके बारे में जानते	• मानचित्र पर वैदिक संस्कृति के स्थलों का अंकन (शिक्षक के द्वारा) • शिक्षक चित्र प्रदर्शित कर वैदिक उपकरणों के महत्व को बता सकते हैं। • पौराणिक कथाओं के माध्यम से वैदिक सामाजिक धार्मिक क्रियाकलापों पर चर्चा (शिक्षक के द्वारा) • वैदिक संस्कृति एवं बौद्ध–जैन संस्कृति में अंतर की विवेचना करना।(शिक्षक के द्वारा) • समूह चर्चा :– लोहे का मानव जीवन में उपयोगिता। (शिक्षक–छात्र के बीच)	3 कार्य दिवसों में

		हैं।		
• महत्वपूर्ण आरंभिक राज्यों के क्षेत्र, वंश एवं शासकों के बारे में बताते हैं। • मौर्य साम्राज्य के उदय की परिस्थिति, उसके शासकों, प्रशासन और अशोक के 'धम्म' का विश्लेषण करते हैं।	**प्रारंभिक राज्य (अध्याय–7)** **प्रथम साम्राज्य (अध्याय–9)**	• राज्य, साम्राज्य एवं महाजनपद का महत्व बताते हैं। • मगध के उत्थान में सहायक तत्वों का विश्लेषण करते हैं। • मौर्य साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था एवं न्याय और स्थानीय व्यवस्था को जानते हैं। • सम्राट अशोक के प्रजाहित कार्यो की तुलना आज के संदर्भ में करते हैं।	• जन, जनपद, महाजनपद और राज्य तथा साम्राज्य में अंतर (शिक्षक के द्वारा) • मानचित्र पर प्रारंभिक राज्य एवं मौर्य साम्राज्य के क्षेत्रों का अंकन। (शिक्षक द्वारा) • मौर्यकालीन प्रशासनिक एवं अन्य व्यवस्थाओं को बताना। (शिक्षक द्वारा पाठ्य पुस्तक के आधार पर) • अशोक के 'धम्म' की विशेषताओं का जीवन के आदर्शो से जोड़कर बताना। (शिक्षक द्वारा) • मौर्य साम्राज्य के पतन के कारणों का विश्लेषण।(शिक्षक के द्वारा) • पाठ्य–पुस्तक में दी गयी मौर्यकालीन चित्रों का अवलोकन शिक्षक के सहयोग से।	3 कार्य दिवसों में
• मौर्योत्तरकालीन, आर्थिक गतिविधियों की समझ है। • संगम काल की समझ है।	**शहरी एवं ग्राम्य जीवन (अध्याय–10)**	• भारत रोम व्यापार का विश्लेषण करते हैं। • खेती के विकास में सिंचाई के साधनों के महत्व को जानते हैं। • सिल्क रूट (रेशम मार्ग) के महत्व को जानते हैं। • संगमकालीन राजवंश,	• मौर्योत्तरकालीन मानचित्र का अवलोकन, विश्लेषण एवं रेशम मार्ग की पहचान।(शिक्षकों के द्वारा) • मौर्योत्तरकालीन सिंचाई के साधनों की जानकारी एवं उसके महत्व पर चर्चा। • रेशम मार्ग से होनेवाले व्यापारिक वस्तुओं की सूची बनाना (पुस्तक	1 कार्य दिवस में

		उसके क्षेत्र एवं राजधानी की जानकारी है।	के माध्यम से छात्र द्वारा) • उत्तर और दक्षिण भारतीय शहरों की सूची बनाना पुस्तक के माध्यम से। • प्राचीन वस्त्र निर्माण केन्द्र को जानने का प्रयास। (मानचित्र के माध्यम से)	
• धर्म, संस्कृति, वास्तुकला आदि के क्षेत्र में भारत का बाहर के क्षेत्रों के साथ संपर्क एवं उनके प्रभावों से परिचित हैं। • बौद्ध धर्म के विदेशों में प्रसार से परिचित होते हैं।	**सुदूर प्रदेशों से संपर्क (अध्याय–11)**	• इण्डो–ग्रीक शासक मिलिन्द के बारे में जानते हैं। • शक, कुषाण एवं उसके शासकों के बारे में जानते हैं। • कनिष्क के साम्राज्य एवं उनकी उपलब्धियों का विश्लेषण करते हैं। • विदेशी संपर्क का भारत पर पड़ने वाले प्रभाव को जानते हैं। • बौद्ध धर्म के दूसरे देशों मे विकास की कार्यों का विश्लेषण करते हैं। • ब्राह्मण धर्म की पुनर्स्थापना और मूर्ति पूजा के प्रचलन की शुरूआत को समझते हैं।	• मानचित्र की सहायता से मौर्योत्तरकालीन राजनैतिक स्थिति की चर्चा कनिष्क के संदर्भ में। (शिक्षक द्वारा) • बौद्ध धर्म और कला पर समूह चर्चा गांधार और मथुरा शैली के संदर्भ में। (शिक्षक एवं पाठ्य–पुस्तक के माध्यम से) • सुदर्शन झील एवं रूद्रदामन की चर्चा–(शिक्षक के द्वारा)	1 कार्य दिवस में

• गुप्त राजवंश एवं राजाओं तथा उनके कार्यों को बताते हैं। • अन्य महत्वपूर्ण राजवंशो, राजाओं के योगदानों को उदाहरण के साथ बताते हैं।	**नए साम्राज्य एवं राज्य (अध्याय–12)**	• गुप्त साम्राज्य के संस्थापक के बारे में जानते हैं। • समुद्रगुप्त एवं प्रयाग प्रशस्ति का विश्लेषण। • चंद्रगुप्त–II विक्रमादित्य की उपलब्धियों को बताते हैं। • गुप्त प्रशासन के बारे में बताते हैं। • हर्षवर्द्धन के राज्य और उनके कार्यों का विवेचन करते हैं। • पल्लव, चालुक्य राज्य एवं उनकी उपलब्धियों के बारे में बताते हैं। • नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना और उसके महत्व के बारे में बताते हैं।	• गुप्त राजवंश की वंशावली चार्ट पेपर के माध्यम से प्रदर्शन। (शिक्षक छात्र के बीच) • मानचित्र पर समुद्रगुप्त एवं गुप्त राजवंश का अंकन एवं साम्राज्य विस्तार की समूह चर्चा। (शिक्षक एवं छात्र के बीच) • मानचित्र पर दक्षिण भारतीय राजवंशों का अंकन। (शिक्षक छात्र के बीच) • विभिन्न राजवंशो के योगदानों के बारे में समूह चर्चा। (शिक्षक छात्र के बीच)	2 कार्य दिवसों में
• उस समय की साहित्यिक रचनाओं में दिए गए वर्णनों, घटनाओं, व्यक्तित्वों का वर्णन करता है। • संस्कृति और विज्ञान के क्षेत्र में भारत के महत्त्वपूर्ण योगदानों की समझ है।	**संस्कृति और विज्ञान (अध्याय–13)**	• पुराण महाकाव्य एवं धार्मिक, लौकिक रचनाओं में अंतर को बताता है। • चौथी से सातवीं शताब्दी के बीच गणितज्ञों एवं उनकी	• रचनाओं का सूचीकरण करते हैं। (शिक्षको के द्वारा) • मंदिरों की तुलना आस–पास के मंदिरों के भ्रमण के द्वारा। • प्राचीन गणितज्ञों की उपलब्धियों का सूचीकरण एवं विश्लेषण (छात्र द्वारा)	1 कार्य दिवस में

• मंदिर निर्माण कला को परिभाषित करते हैं।		उपलब्धियों के बारे में बताते हैं। • विहार चैत्य, स्तूप एवं मंदिर में अंतर को बताते हैं। • ऐतिहासिक स्रोतों के रूप में धार्मिक और लौकिक रचनाओं के विषय वस्तु की जानकारी है।	• अजन्ता–ऐलोरा और बराबर की पहाड़ी के चित्रों का तुलनात्मक अध्ययन। (शिक्षक छात्र के बीच)	
	पुनरावृति			1 कार्य दिवस में

बिहार सरकार

Catch-Up Course

सेतु सामग्री

कक्षा–VII

विषय–सामाजिक विज्ञान

सहयोग– बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, बिहार

अकादमिक सहयोग– यूनिसेफ, बिहार

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार, पटना द्वारा विकसित

शैक्षणिक सत्र 2021–22 के लिए तीन महीनों की सेतु सामग्री (Catch up Course)

कक्षा 7 (कक्षा–6 के बच्चे जो सत्र 2021–22 में कक्षा 7 में पढ़ रहे हैं, उनके लिए 60 कार्य दिवसों की सामग्री)

विषयः– सामाजिक विज्ञान (भूगोल)

समान अधिगम प्रतिफल के आधार पर पाठों को समेकित कर कार्य दिवसों के आधार पर विभक्त किया गया है। मूल पाठों की संख्या 9 है जिसे समेकन के पश्चात 6 (छः) अध्यायों के अंतर्गत रखा गया है।

अधिगम प्रतिफल	क्रम संख्या	पाठक्रम संख्या	अध्याय	अवधि
• सौरमंडल के सभी ग्रहों को सूर्य से क्रमशः दूरी तथा आकार एवं रंग के आधार पर जानते हैं। • पृथ्वी पर जीवन की उपस्थिति के कारण को बताते हैं।	1.	1.	हमारा सौरमंडल	4 कार्य दिवसों में
• ग्लोब के माध्यम से पृथ्वी की घूर्णन एवं परिक्रमण गतियों तथा अक्षांश, देशांतर रेखाओं तथा ध्रुवों को बताते हैं। • दिन–रात का होना और मौसम परिवर्तन के कारण बताते हैं।	2.	2. 3.	पृथ्वी और ग्लोब पृथ्वी और गतियाँ	5 कार्य दिवसों में
• पृथ्वी के तीनों मंडलों के बारे में जानते हैं तथा स्थल मंडल, जल मंडल और वायु मंडल के आपसी प्रभाव को बताते हैं।	3.	4.	पृथ्वी के परिमंडल	2 कार्य दिवसों में
• पर्वत, पठार और मैदान में अंतर बताते है तथा मानचित्र पर विभिन्न स्थलरूपों को दर्शाते हैं।	4.	5.	पृथ्वी के प्रमुख स्थलरूप	3 कार्य दिवसों में
• दिशाओं को बताते एवं अंकित करते हैं तथा विद्यालय का नज़री नक्शा बना लेते हैं।	5.	6. 7.	दिशाएँ मानचित्र अध्ययन	3 कार्य दिवसों में
• बिहार की चौहद्दी, पड़ोसी राज्यों एवं भारत के मानचित्र पर स्थिति को बताते हैं। • बिहार की जलवायु, फसलों एवं भौगोलिक विविधताओं को बताते हैं। • बिहार के प्रमुख ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पर्यटन स्थलों के बारे में बताते हैं।	6.	8. 9.	हमारा राज्य बिहार बिहार दर्शन– 1 एवं 2	3 कार्य दिवसों में

कक्षा – 7 विषय – भूगोल

सीखने का प्रतिफल Learning Outcome	अध्याय Chapters	अधिगम संकेतक Learning Indicators	सुझावात्मक प्रक्रिया Suggestive process	अवधि Duration
• सौरमंडल एवं सभी ग्रहों के बारे में जानते हैं। • तारों, ग्रहों, उपग्रहों जैसे– सूर्य, पृथ्वी, तथा चंद्रमा आदि में अंतर जानते हैं। • पृथ्वी पर जीवन की उपस्थिति के कारण को जानते हैं। • आकाश गंगा के बारे में जानते हैं।	**1.हमारा सौरमंडल**	• सौरमंडल एवं सौर परिवार के बारे में बताते हैं। • सूर्य से सबसे दूर एवं नजदीक के ग्रह का नाम बताते हैं। • सूर्य और तारे के आकार के आधार पर बड़ा–छोटा बताते है। • अंतरिक्ष से देखने पर पृथ्वी के नीला दिखने के कारण जानते हैं। • पृथ्वी के उपग्रह(चंद्रमा) के बारे में बताते हैं। • क्षुद्र ग्रह, उल्का पिंड के बारे में बताते हैं। • आकाश गंगा, सप्तर्षि तारों के समूह एवं ध्रुवतारा के बारे में बात करते हैं। • राशियों, नक्षत्रों के बारे में बात करते हैं।	• शिक्षक बच्चों से सामान्य बातचीत में सूर्य, चंद्रमा तथा पृथ्वी की चर्चा कर सकते हैं। • सौरमंडल के चित्र दिखाते हुए सौर परिवार की जानकारी दे सकते है। • पृथ्वी और चंद्रमा के चित्र दिखाते हुए चंद्रमा के बारे में चर्चा कर सकते हैं। • खगोलीय परिघटनाओं जैसे तारे, ग्रह, उपग्रह(चंद्रमा), ग्रहण आदि को शिक्षक या अभिभावक की सहायता से देख समझ सकते हैं। • नजदीकी खगोल केंद्र या तारामंडल जाकर सौरमंडल की अवधारणा को स्पष्ट कराया जा सकता है। • शिक्षक बच्चों से सौरमंडल की रचना का खेल खेलवा सकते हैं, जिसमें एक बालक को केंद्र में सूर्य की भूमिका में रखकर अन्य बच्चों से ग्रहों की संख्या, आकार, सूर्य से निकटता एवं क्रमशः दूरी तथा ग्रहों के रंग के कपड़ो में रखकर चक्कर लगवा सकते हैं।	4 कार्य दिवसो में

• अक्षांश और देशांतर, ध्रुवों, विषुवत रेखा, कर्क तथा मकर रेखाओं को ग्लोब तथा विश्व के मानचित्र पर पहचानते हैं। • ग्लोब के माध्यम से पृथ्वी की दैनिक गति या घूर्णन के कारण दिन–रात का होना तथा वार्षिक गति के कारण होने वाले मौसम परिवर्तन को जानते है। • ध्रुवों पर लगातार छः माह तक दिन और रात होने के कारण जानते हैं। • ग्लोब में शीत कटिबंध तथा शीतोष्ण कटिबंध में स्थित देशों के नाम बताते हैं।	**2. (क). पृथ्वी और ग्लोब (ख) पृथ्वी और उसकी गतियाँ**	• पृथ्वी की बनावट को समझते हुए ग्लोब और विश्व के मानचित्र में अंतर करते हैं। • संसार के नक्शे पर महादेश और महासागर के नाम को खोजते हैं। • अक्षांश तथा देशांतर रेखाओं, दोनों गोलार्द्धों, ध्रुवों, विषुवत रेखा, कर्क तथा मकर रेखाओं को समझते हैं। • किसी स्थान की स्थिति एवं समय निश्चित करने के लिए देशांतर रेखाओं के महत्व को जानते हैं। • अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा तथा ताप कटिबंधों को पहचानते हैं। • पृथ्वी के दोनों गतियों क्रमशः घूर्णन एवं परिक्रमण तथा उनके कारण क्रमशः दिन–रात का होना तथा मौसम परिवर्तन के बारे में बताते हैं। • ध्रुवों पर लगातार छः माह तक दिन और रात होने के कारण जानते हैं।	• शिक्षक ग्लोब के माध्यम से पृथ्वी की बनावट तथा गतियों की चर्चा कर सकते हैं। • बच्चों के दैनिक जीवन से जुड़ी चीजों जैसे गेंद या नारंगी के उदाहरण से पृथ्वी के आकार तथा दोनों गोलार्द्धो की जानकारी दी जा सकती है। • ग्लोब पर महादेश, महासागर के नाम ढूंढने के लिए बच्चों से कहा जा सकता है। • बच्चों से ग्लोब की खडी और पड़ी रेखाओं की चर्चा कर सकते हैं। • शिक्षक ग्लोब के माध्यम से पृथ्वी की दैनिक गति तथा पृथ्वी द्वारा सूर्य की परिक्रमा चार्ट प्रदर्शित कर वार्षिक गति की अवधारणा स्पष्ट कर सकते हैं। • ग्लोब में ताप कटिबंधों को समझाते हुए विभिन्न कटिबंधों में स्थित देशों की सूची बनवा सकते हैं।	5 कार्य दिवसो में

		• ग्लोब में शीत कटिबंध एवं शीतोष्ण कटिबंध में स्थित देशों के नाम बताते हैं।		
• स्थल मंडल, जल मंडल और वायु मंडल के आपसी संबंध एवं प्रभाव के बारे में बताते है। • पृथ्वी पर जीवन पाए जाने के कारण, इसे एक विशिष्ट खगोलीय पिंड के रूप में समझते हैं। • मानचित्र, चित्र नक्शा या चार्ट पेपर का उपयोग करते हैं। • महासागरों की सूची बनाते हैं। • जलीय, स्थलीय जीवों की वर्गीकृत सूची बनाते हैं। • मनुष्य के लिए जल, थल और वायु की आवश्यकता बताते हुए तीनों मंडलों के महत्व का विश्लेषण करते हैं।	**3. पृथ्वी के परिमंडल**	• जलमंडल, स्थल मंडल तथा वायु मंडल के बारे में जानते हैं। • महासागरों के नाम बताते हैं। • जल संधि तथा स्थल संधि के बारे में जानते हैं। • जीवन के लिए तीनों मंडलों की आवश्यकता के बारे में जानते हैं। • जलीय, स्थलीय जीवों की सूची बनाते हैं। • स्वयं को जैव मंडल का सदस्य मान तीनों मंडलों की आवश्यकता का विश्लेषण करते हैं।	• बच्चो से जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के बारे में बातचीत करते हुए तीनों मंडलों के बारे में उन्हें बता सकते हैं। • पृथ्वी पर जीवन पाए जाने के कारण इसे एक विशिष्ट खगोलीय पिंड के रूप में बता सकते हैं। • विश्व के मानचित्र पर स्थलमंडल एवं जलमंडल को उपयुक्त रंगों से रंगकर दिखा सकते हैं। • चार्ट पेपर पर वायुमंडल की संरचना का मॉडल चित्र बना सकते हैं।	2 कार्य दिवसो में

• पर्वत, पठार और मैदान में अंतर बताते हैं। • मानचित्र पर भौतिक स्वरूपों जैसे पर्वतो, पठारों मैदानों आदि को अंकित करते हैं। • मानव जीवन पर स्थलीय रूपों के प्रभाव को बताते हैं।	**4. पृथ्वी के प्रमुख स्थलरूप**	• पृथ्वी के विभिन्न स्थलरूपों पर्वत, पठार और मैदान को जानते हैं तथा उसके प्रकार, विशेषताओं तथा महत्व को बताते हैं। • पर्वत एवं उसके प्रकार के बारे में जानते है तथा पर्यावरण एवं मानव जीवन के लिए उसके महत्व को समझते हैं। • पठार के बारे में जानते हैं तथा उनके नाम बताते हैं। • मैदानी भागों में भू–जल के दुरूपयोग के प्रति संवेदनशील हैं। • बिहार के विस्तार का पर्वत, पठार, मैदान के संदर्भ में व्याख्या करते हैं।	• शिक्षक बच्चों से उसके स्थानीय परिवेश के बारे में बातचीत करते हुए पाठ पर आ सकते हैं। • चित्रों के माध्यम से मैदान, पर्वत, पठार को समझा सकते हैं। • परिभ्रमण के दौरान भी पहाड़ और मैदान की अवधारणा को स्पष्ट कर सकते हैं। • बिहार के नक्शे पर मैदान, पर्वत तथा पठार को चिन्हित करवा सकते हैं। • पहाड़ों तथा पठारों के नाम की सूची बनवा सकते हैं। • पहाड़ एवं पठार के रेखाचित्र तथा मिट्टी या अन्य सामग्रियों के मॉडल बच्चों से बनवा कर कक्षा में प्रदर्शित किए जा सकते हैं।	3 कार्य दिवसो में
• दिशाओं के नाम बताते हैं एवं समतल सतह पर उन्हें अंकित करते हैं। • मानचित्र और नजरी नक्शा में अंतर बताते हैं। • मानचित्र का महत्व	**5. (क) दिशाएँ (ख) मानचित्र अध्ययन**	• दिशाओं को पहचानते हैं तथा सूर्य के सामने खड़े होकर अपनी पीठ और हाथों के फैलाव की दिशा बताते हैं। • मानचित्र पर दिशा अंकित करते हैं तथा भारत की चौहद्दी बताते हैं।	• शिक्षक प्रश्नोत्तर विधि द्वारा बच्चों को दिशाओं की जानकारी दे सकते हैं। • मानचित्र तथा इसके प्रकार के बारे में बताऐंगे। • विद्यालय परिसर तथा घर से विद्यालय तक के रास्ते का नजरी नक्शा बनवाया जा सकता हैं।	3 कार्य दिवसो में

जानते हैं तथा अपने आस–पड़ोस का मानचित्र बनाकर उस पर मापक, दिशाएँ तथा अन्य विशेषताओं को रूढ चिन्हों से दिखाते हैं।		• नजरी नक्शा बनाते हैं तथा उसके आधार पर मंजिल तक पहुँचाते हैं। • चित्र और मानचित्र में अंतर समझते हैं। • मानचित्र के प्रकार जानते हैं। • किसी बड़े माप को छोटे स्केल की माप में बदल सकते है। • नजरी नक्शा और मानचित्र में दिए गए संकेतक चिन्हों तथा रंगों को जानते हैं। • मानचित्र के रंगों के महत्व को जानते हैं।	• चार्ट पेपर, मानचित्र आदि की सहायता ली जा सकती है। • समूह कार्य द्वारा बड़े माप को छोटे माप में बदलने का कार्य करा सकते हैं। • मानचित्र में रंगों एवं संकेतों को समूह कार्य द्वारा समझाया जा सकता हैं। • बच्चों को समूह में बाँटकर नजरी नक्शा का निर्माण और प्रस्तुति करवारकर दक्ष किया जा सकता है।	
• बिहार के भौगोलिक विभिन्नताओं की जानकारी है। • राज्य की वनस्पतियों, फसलों, वन्य प्राणियों एवं उनके संरक्षण की आवश्यकता की जानकारी है। • बढ़ती जनसंख्या के कुप्रभावों की जानकारी है।	**6. (क) हमारा राज्य बिहार (ख) बिहार दर्शन – 1 एवं 2**	• बिहार की राजधानी, चौहद्दी तथा प्रशासनिक विभाजन के बारे में जानते हैं और उन्हें बिहार के नक्शे पर चिन्हित करते हैं। • बिहार के जलवायु की प्रकृति तथा हर वर्ष बाढ़ की विभीषिका और उससे प्रभावित होनेवाले क्षेत्रों तथा वहाँ के जनजीवन पर उसके प्रभाव को बताते हैं।	• शिक्षक सामान्य चर्चा से अपने राज्य (बिहार) के बारे में बताते हुए भारत के मानचित्र पर बिहार के पड़ोसी राज्यों के नाम बताने हेतु प्रेरित कर सकते हैं। • जलवायु की जानकारी देने हेतु व्याख्यान विधि की सहायता ले सकते हैं। • मानचित्र में चिन्हित कर राज्य के सभी जिलों, वन क्षेत्रों, बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों की जानकारी दी जा सकती हैं।	3 कार्य दिवसो में

• बिहार के ऐतिहासिक, धार्मिक तथा दर्शनीय स्थलों की जानकारी है।		• विभिन्न क्षेत्रों में उगने वाली फसलों को जानते हैं तथा खरीफ एवं रबी फसलों के नाम बताते हैं। • कृषि उत्पादों को खाद्य एवं नकदी फसलों में बाँटकर सूचीबद्ध करते है। • राज्य के वन क्षेत्रों तथा यहाँ पाए जानेवाले वन्य जीवों तथा अभ्यारण्यों को जानते हैं। • बढ़ती जनसंख्या के कुप्रभावों जैसे वन–विनाश, प्रदूषण आदि को बताते है। • ऐतिहासिक स्थल का अर्थ तथा महत्व बताते हैं। • बोधगया, विष्णुपद मंदिर, पितृ पक्ष मेला आदि के ऐतिहासिक, धार्मिक महत्व को जानते हैं। • राजगीर के गर्म पानी के कुंड, जल मंदिर, नालंदा विश्वविद्यालय, शांति स्तूप के बारे में बताते हैं। • संग्रहालय तथा पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के कार्यो को जानते हैं।	• कृषि उत्पादों की व्याख्या कर नगदी एवं खाद्य फसलों की सूची, उत्पादन क्षेत्रों की सूची आदि बनवाए जा सकते हैं। • बिहार की बढ़ती जनसंख्या पर चर्चा व्याख्यान तथा प्रश्नोत्तरी विधि से की जा सकती है। • बिहार में पाए जाने वाले जीवों एवं अभ्यारण्यों की जानकारी सूची बनाकर तथा चित्रों द्वारा दी जा सकती है। • बच्चों को सामान्य चर्चा द्वारा बिहार के दर्शनीय एवं ऐंतिहासिक धार्मिक स्थलों की जानकारी दी जा सकती है। • दर्शनीय स्थलों का सूचीकरण करवाकर तथा बच्चों को इन ऐतिहासिक–धार्मिक स्थलों पर परिभ्रमण हेतु ले जाकर उनके अनुभवों को साझा किया जा सकता है। • ऐतिहासिक स्थलों के चित्र चार्ट में चिपकाकर बच्चों से उनपर अनुच्छेद लिखवाकर कक्षा में प्रदर्शित किया जा सकता है। • यू–ट्यूब की मदद से ऐतिहासिक स्थलों को मोबाइल पर दिखा सकते हैं।	

		• बिहार के नक्शे में मुख्य पर्यटन स्थलों का चिन्हित करते हैं। • शेरशाह का मकबरा, गोलघर, महाबोधि मंदिर, महात्मा गांधी सेतु, श्री हरमंदिर साहिब, गाँधी मैदान, के बारे में जानते हैं। • पर्यटन से होनेवाले बौद्धिक ज्ञान तथा परिभ्रमण किए गए जगहों का वर्णन करते हैं।		

बिहार सरकार

Catch-Up Course

सेतु सामग्री

कक्षा–VII

विषय–सामाजिक विज्ञान

सहयोग– बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, बिहार

अकादमिक सहयोग– यूनिसेफ, बिहार

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार, पटना द्वारा विकसित

शैक्षणिक सत्र 2021–2022 के लिए तीन महीनों की सेतु सामग्री (Catch-up Course)

कक्षा – 7 (कक्षा 6 के बच्चे जो सत्र 2021–2022 में कक्षा 7 में पढ़ रहे हैं, उनके लिए 60 कार्य दिवसों की सामग्री)

विषय– सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन

समान अधिगम प्रतिफल के आधार पर पाठों को समेकित कर कार्य दिवसों के आधार पर विभक्त किया गया है। मूल पाठों की संख्या 7 (सात) है जिसे समेकन के पश्चात 6 (छः) अध्यायों के अन्तर्गत रखा गया है।

अधिगम प्रतिफल	पाठ क्रम संख्या	पाठ का नाम	अवधि
• मानवीय विविधताओं को जीवन की समृद्धि से जोड़ते हुए उसके प्रति सम्मान भाव रखते हैं। मानवीय विविधता, समानता एवं असमानता के अंतर को समझते हैं।	1.	विविधता की समझ	2 कार्य दिवसों में
• ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विभिन्न रोजगारों के बारे में जानते हैं।	2.	ग्रामीण एवं शहरी जीवन यापन के स्वरूप	4 कार्य दिवसों में
• वस्तु विनिमय प्रणाली एवं आधुनिक विनिमय प्रणाली की जानकारी रखते हैं।	3.	लेन–देन का स्वरूप	3 कार्य दिवसों में
• सरकार के विभिन्न स्तरों को समझना, उनमें अंतर करना तथा उनकी भूमिका से अवगत हैं।	4.	हमारी सरकार	5 कार्य दिवसों में
• स्थानीय सरकार के विभिन्न संगठन, स्तर एवं कार्यों का वर्णन करते हैं।	5.	स्थानीय सरकार	5 कार्य दिवसों में
• सड़क यातायात के संकेतों एवं सुरक्षा उपायों के प्रति संवेदनशील हैं।	6.	सड़क सुरक्षा उपाय	1 कार्य दिवस में

शैक्षणिक सत्र 2021–2022 के लिए तीन महीनों की सेतु सामग्री (Catch-up Course)

कक्षा – 7 (कक्षा 6 के बच्चे जो सत्र 2021–2022 में कक्षा 7 में पढ़ रहे हैं, उनके लिए 60 कार्य दिवसों की सामग्री)

विषय– सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन

सीखने का प्रतिफल Learning Outcomes	अध्याय Chapters	अधिगम संकेतक Learning Indicators	सुझावात्मक प्रक्रिया Suggestive process	अवधि Duration
• विविधता से परिचित है। • बच्चें विविधताओं के प्रति सम्मान भाव रखते हैं। • मानवीय एवं सामाजिक विविधताओं के विभिन्न प्रकार का वर्णन करते हैं। • अपने परिवार एवं समाज के समानता एवं असमानता के विभिन्न रूपों में अन्तर करते हैं।	**अध्याय– I** **विविधता की समझ**	• विविधता की समझ विकसित करते हैं। • विविधता से जीवन की समृद्धि का भाव जानते हैं। • संविधान की प्रस्तावना जानते हैं। • भेदभाव एवं असमानता के अन्तर को जानते हैं। • सामाजिक असमानताओं को दूर करने के लिए महापुरूषों द्वारा किए गए कार्यों के बारे में बताते हैं। • बच्चों में विविधताओं को आत्मसात कराते हैं।	• शिक्षक बच्चों के साथ उसके रंग–रुप, वेश–भूषा, भाषा, शारीरिक बनावट आदि से जो भिन्नता दिखती है उससे विविधता की समझ विकसित कर सकते हैं। • पाठ में दिए गए निशान और निशान अहमद की विभिन्नता की चर्चा करते हुए, बच्चों से विभिन्न विविधता की सारणी में रंग–रुप, वेश–भूषा, धर्म, जाति, भाषा, लिंग, खान–पान आदि को शामिल कर सकते हैं। • राष्ट्रगान के माध्यम से विविधता में एकता की समझ विकसित कर सकते हैं। • पाठ में आवासीय विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों की कहानी या उसी तरह की अन्य कहानियों के माध्यम से विविधता के प्रति सम्मान की समूह चर्चा कर सकते हैं।	2 कार्य दिवसों में
• ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में चल रहे जीवन यापन के लिए विभिन्न व्यवसायों एवं	**अध्याय– II** **ग्रामीण एवं शहरी जीवन यापन के**	• ग्रामीण एवं शहरी परिवेश में जीवन यापन के विभिन्न स्वरूपों– कृषि, पशुपालन, हस्तशिल्प, स्वरोजगार	• शिक्षक बच्चों से चर्चा के माध्यम से 'जीवन यापन' की समझ विकसित कर सकते हैं।	4 कार्य दिवसों में

रोजगार की उपलब्धता की जानकारी रखते हैं। • सरकार द्वारा व्यवसायों को प्रोत्साहन दिए जाने के लिए किए जा रहे कार्यो से अवगत है।	**स्वरूप** **नोट– ग्रामीण एवं शहरी जीवन यापन के स्वरूप को एक साथ बताया गया है।**	(फुटपाथी, दुकानदार, फेरी वाला, मौसमी मजदूर, बड़े दुकानदार) के बारे में बताते हैं। • किसान एवं कृषक मजदूर के बारे में बताते हैं। • स्थायी, अस्थायी एवं सरकारी सेवक के बारे में बताते हैं। • घरेलू सेवक इनके कार्य क्षेत्र, कार्य क्षेत्र की सुविधा–असुविधा के बारे में बताते हैं। • ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में जीवन यापन के क्षेत्रों में सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयास को जानते हैं।	• शिक्षक बच्चों से उसके घर में उपयोग होने वाली खाद्य सामग्री के माध्यमों की समूह चर्चा कर सकते हैं। • बच्चों से ग्रामीण एवं शहरी परिवेश में जीवनयापन कर रहे लोगों से मिलकर उनकी आजीविका के बारे में जानकारी दे सकते हैं। • बच्चों से अपने क्षेत्र के अनुसार आजीविका संबंधी किए जाने वाले कार्यों की सूची तैयार करवा सकते हैं। सूची को कृषि कार्य, गैर कृषि कार्य, स्वरोजगार आदि में विभाजित कर सकते हैं। • बच्चों से परिवार या आस–पास के कुछ लोगों की सूची तैयार करवा सकते हैं जिसमें व्यक्ति का नाम, काम की जगह, काम की सुरक्षा है या नहीं है, स्वयं का काम या रोजगार आदि का वर्णन हो। • एक स्थायी और नियमित नौकरी, अनियमित काम में किस तरह अलग है, इसकी समूह चर्चा करवा सकते हैं। • शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वालों के जीवनयापन के क्षेत्र में सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों जैसे– बैंक लोन, जीविका, बिजली, कौशल विकास, सिंचाई, मनरेगा आदि की चर्चा की जा सकती है।	
• बच्चों में लेन–देन एवं खरीद–बिक्री की समझ विकसित है। • वस्तु विनिमय प्रणाली एवं	**अध्याय– III** **लेन देन का बदलता स्वरूप**	• विनिमय प्रणाली के अर्थ को जानते हैं। • वस्तु विनिमय प्रणाली एवं आधुनिक विनिमय प्रणाली को जानते हैं।	• शिक्षक, बच्चों के साथ बातचीत करते हुए लेन–देन के तरीकों पर चर्चा कर सकते हैं। चर्चा के दौरान विनिमय प्रणाली के अर्थ स्पष्ट कर सकते हैं।	3 कार्य दिवसों में

आधुनिक विनिमय प्रणाली से अवगत है। • आर्थिक गतिविधियों के नियमन में सरकार की गतिविधियों से परिचित हैं। • रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया से अवगत है।		• वस्तु विनिमय प्रणाली की कठिनाइयों को जानते हैं। • प्रचलित मुद्रा के बारे में जानते हैं। • धातु मुद्रा की कठिनाइयों को जानते हैं। • मौद्रिक विनिमय प्रणाली एवं डिजिटल विनिमय प्रणाली की सहुलियत एवं समस्याओं के बारे में जानते हैं। • चेक तथा चेक विनिमय प्रणाली को जानते हैं। • ATM मशीन एवं ATM कार्ड को जानते हैं। • बैंक के बारे में जानते हैं। • रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के बारे में बताते हैं।	• बच्चों के सामाजिक परिवेश में वस्तु विनिमय प्रणाली किन रूपों में होता है, इसकी चर्चा करते हुए वस्तु विनिमय प्रणाली को स्पष्ट किया जा सकते है। • धातु मुद्रा, सिक्के, कागजी मुद्रा एवं प्लास्टिक मुद्रा का चार्ट बना सकते हैं। • वस्तु विनिमय, धातु मुद्रा, सिक्के, पत्र मुद्रा, प्लास्टिक मुद्रा की सुविधा और असुविधा की चर्चा कर सकते हैं। • चेक, चेक द्वारा लेन–देन की प्रक्रिया की जानकारी सामूहिक चर्चा द्वारा दी जा सकती है। • ATM मशीन की सुविधा एवं इसके प्रयोग में की जाने वाली सावधानी की चर्चा कर सकते हैं। • रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के बारे में सामूहिक चर्चा करते हुए इसकी जानकारी दे सकते हैं।	
• सरकार के बारे में जानकारी रखते हैं। • सरकार के विभिन्न स्तरों को पहचानते हैं। • केन्द्र सरकार, राज्य सरकार एवं स्थानीय सरकार के बीच अंतर को जानते हैं। • लोकतांत्रिक सरकार की विशेषता से परिचित हैं।	**अध्याय– IV** **हमारी सरकार**	• सरकार एवं सरकार के कार्य के बारे में जानते हैं। • सरकार के अंग– व्यवस्थापिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका के बारे में जानते हैं। • सरकार के स्तर के बारे में जानते हैं। • केन्द्र शासित प्रदेशों के बारे में जानते हैं। • राजतंत्र एवं लोकतंत्र सरकार के बारे में जानते हैं तथा अन्तर बताते हैं।	• शिक्षक, बच्चों से सामान्य बातचीत में सरकार और सरकार की आवश्यकता की चर्चा कर सकते हैं। • अखबारों के मुख्य समाचार के माध्यम द्वारा सरकार के कार्यों की चर्चा कर सकते हैं। • सरकार के कार्यो के आधार पर सरकार के स्तर की जानकारी दे सकते हैं। • भारत के मानचित्र में केन्द्र शासित प्रदेशों को चिह्नित कर सकते हैं। (अद्यतन जानकारी दें)	5 कार्य दिवसों में

		• सार्वभौम वयस्क मताधिकार हेतु किए गए संघर्ष के बारे में जानते हैं। • लोकतांत्रिक सरकार के मुख्य तत्त्व बताते हैं। • विवादों के समाधान में सरकार की भूमिका के बारे में जानते हैं। • सामाजिक समानता एवं न्याय के संबंधों को जानते हैं। • लोककल्याण के प्रति संवेदनशील हैं।	• चर्चा के माध्यम से राजतंत्र और लोकतंत्र के बारे में बताया जा सकता है और इससे संबंधित रोल प्ले करा सकते हैं। • रोल प्ले से निकले बिन्दुओं से लोकतंत्र और राजतंत्र के अंतर को स्पष्ट कर सकते हैं। • भारत में स्वतंत्रता आन्दोलन और सार्वभौम वयस्क मताधिकार हेतु किए गए संघर्षों की जानकारी सामूहिक चर्चा के माध्यम से दी जा सकती है। • पाठ्यपुस्तक में दिए गए लोकतांत्रिक सरकार के मुख्य तत्त्व – भागीदारी, समस्याओं का समाधान एवं समानता एवं न्याय के प्रमुख सिद्धांतों की सामूहिक चर्चा कर सकते हैं। • लोकतांत्रिक सरकार के प्रति संवेदनशीलता उभरने की कोशिश कर सकते हैं।	
• स्थानीय स्वशासन के विभिन्न संगठन, स्तर एवं कार्यों का वर्णन करते हैं। • स्थानीय स्वशासन की संस्थाओं का विभिन्न संस्थाओं से सह संबंध से परिचित हैं। • स्थानीय स्तर पर सरकार की भूमिका की जानकारी रखते हैं। • नगरीय स्थानीय शासन	**अध्याय– V** **स्थानीय सरकार**	• स्थानीय सरकार यानि ग्राम पंचायत के बारे में जानते हैं। • ग्राम पंचायत के गठन के बारे में जानते हैं। • मतदाता सूची की जानकारी बताते हैं। • ग्राम पंचायत के सचिव के बारे में जानते हैं। • पंचायती राज व्यवस्था में आरक्षण व्यवस्था के महत्व को जानते हैं। • ग्राम पंचायत के कार्यों को जानते हैं। • ग्राम पंचायत के आय के साधन को जानते हैं।	• शिक्षक, बच्चों से उनके गाँव के मुखिया, सरपंच, सचिव, वार्ड के नाम पूछते हुए ग्राम पंचायत के बारे में सामूहिक चर्चा कर सकते हैं। • शिक्षक, बच्चों से पाठ्यपुस्तक के आधार पर स्थानीय सरकार यानि ग्राम पंचायत के गठन, प्रतिनिधियों के कार्यकाल, पंचायत सचिव, पंचायत निर्वाचन में आरक्षण तथा पंचायत में आय के साधनों की चर्चा कर सकते हैं। • पाठ्यपुस्तक में दिए गए गाँव प्रशासन की बात करते हुए पुलिस तथा थानों के कार्यों की जानकारी दी जा सकती है। इनके	5 कार्य दिवसों में

के आय के स्रोत को जानते हैं।		• पुलिस, थाना के कार्यों को बताते हैं। • हलका कर्मचारी के कार्यों को बताते हैं। • हिन्दु अधिनियम 2005 को बताते हैं। • शहर बनाने की प्रक्रिया को बताते हैं। • नगर निगम, नगर परिषद, नगर पंचायत के कार्य संचालन हेतु बनी समितियों के बारे में बताते हैं। • नगरीय स्थानीय शसन के लोक कल्याणकारी कार्यों के बारे में जानते हैं।	कार्यों को समझाने हेतु आस–पास के घटित घटनाओं में पुलिस की भूमिका की चर्चा कर सकते हैं। • हलका कर्मचारी, अंचल निरीक्षक, अंचलाधिकारी, भूमि सुधार समाहर्ता, जिलाधिकारी इत्यादी की चर्चा, भू–राजस्व की जानकारी देते हुए की जा सकती है। • हिंदु अधिनियम धारा 2005 की जानकारी दे सकते हैं। • पाठ्यपुस्तक द्वारा नगरों के स्थानीय शासन की चर्चा कर सकते हैं। • ग्राम पंचायत और नगर निगम के आय के साधनों की जानकारी दे सकते हैं।	
• यातायात संबंधी विभिन्न संकेतकों एवं नियमों के अनुपालन के प्रति संवेदनशील है।	**अध्याय– VI सड़क सुरक्षा उपाय**	• लाल, हरी, पीली बत्ती के संकेत को जानते हैं। • फुटपाथ और जेब्रा क्रॉसिंग के बारे में जानते हैं। • पैदल चलते एवं सड़क पार करने में सावधानियों को जानते हैं। • रेलवे क्रॉसिंग के बारे में जानते हैं। • यातायात संकेतकों को जानते हैं।	• शिक्षक, बच्चों से उनके आने–जाने के क्रम में लाल, हरी, पीली बत्ती के बारे में बातचीत करेंगे। • फुटपाथ और जेब्रा क्रॉसिंग की उपयोगिता से परिचित कराते हैं। • सड़क पर पैदल चलने के दौरान कौन–कौन सी सावधानियाँ बरतनी है, उनके अनुभव को सुनते हुए शिक्षक बड़े समूह में सड़क सुरक्षा की अवधारणा स्पष्ट करेंगे। • विभिन्न यात्राओं के दौरान सड़क पर मिलने वाली रेलवे क्रॉसिंग तथा उन्हें पार करने में बरती जाने वाली सावधानियों की सूची तैयार कर सकते हैं। • मुख्य यातायात संकेतक को एक चार्ट में बनाकर वर्ग कक्ष में लगा सकते हैं।	1 कार्य दिवस में

बिहार सरकार

Catch-Up Course

सेतु सामग्री

कक्षा– VIII

विषय–सामाजिक विज्ञान

सहयोग– बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, बिहार

अकादमिक सहयोग– यूनिसेफ, बिहार

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार, पटना द्वारा विकसित

शैक्षणिक सत्र 2021–22 के लिए तीन महीनों की सेतु सामग्री (Catch-up Course)

कक्षा – 8 (कक्षा – 7 के बच्चे जो सत्र 2021–22 में कक्षा–8 में पढ़ रहे हैं, उनके लिए 60 कार्य दिवसों की पाठ्य सामग्री)

विषयः–समाजिक विज्ञान (इतिहास) अतीत से वर्तमान – भाग – 02

समान अधिगम प्रतिफल के आधार पर पाठों को समायोजित कर कार्य दिवसों के आधार पर विभक्त किया गया है। मूल पाठों की संख्या 10 (दस) है जिसे समायोजन के पश्चात 8 (आठ) अध्यायों के अंतर्गत रखा गया है।

अधिगम प्रतिफल	क्रम संख्या	पाठ क्रम संख्या	पाठ का नाम	अवधि
मध्यकाल का अध्ययन करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले स्रोतों एवं महत्वपूर्ण ऐतिहासिक बदलावों को स्थान विशेष के साथ जोड़कर देखते हैं।	1.	1	कब, कहाँ और कैसे?	2 कार्य दिवसों में
मध्यकाल के दौरान सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक बदलावों का विश्लेषण करते हैं।	2.	2	नए राज्य एवं राजाओं का उदय	2 कार्य दिवसों में
सल्तनतकालीन शासकों की उपलब्धियों तथा प्रशासनिक उपायों एवं उनकी नीतियों का विश्लेषण करते हैं।	3.	3	तुर्क अफगान शासक	3 कार्य दिवसों में
मुगलकालीन शासकों की उपलब्धियों एवं प्रशासनिक व्यवस्था एवं सुधारों की विवेचना एवं तुलनात्मक व्याख्या करते हैं।	4.	4	मुगल साम्राज्य	3 कार्य दिवसों में
मंदिरों, मस्जिदों, मकबरों एवं महलों के निर्माण में अपनाई गई विशिष्ट शैलियों और तकनीकों का वर्णन करते हैं।	5.	5	शक्ति के प्रतीक के रूप में वास्तुकला किले एवं धार्मिक स्थल	2 कार्य दिवसों में
मध्यकाल में शहरों के उत्थान एवं शहरी जीवन की विशेषताओं की जानकारी है।	6.	6	शहर, व्यापारी एवं कारीगर	2 कार्य दिवसों में
उन कारकों एवं परिस्थितियों की विवेचना, व्याख्या एवं विश्लेषण करते हैं जिससे नए धार्मिक विचारों एवं आंदोलनों का उद्भव हुआ।	7.	7	सामाजिक–सांस्कृतिक विकास	3 कार्य दिवसों में
क्षेत्रीय राजनीतिक शक्तियों के उदय की परिस्थितियों तथा इसके महत्व एवं परिणामों की व्याख्या करते हैं।	8.	9	अठारहवीं शताब्दी में नई राजनैतिक संरचनाएँ	2 कार्य दिवसों में

			पुनरावृत्ति	1 कार्य दिवस में

शैक्षणिक सत्र 2021–22 के लिए तीन महीनों की सेतु सामग्री (Catch-Up Course)

कक्षा 8 (कक्षा–7 के बच्चे जो सत्र 2021–22 में कक्षा 8 में पढ़ रहे हैं, उनके लिए 60 कार्य दिवसों की सामग्री)

कक्षा – 8 विषय-सामाजिक विज्ञान (इतिहास)

सीखने का प्रतिफल **Learning Outcomes**	अध्याय **Chapters**	अधिगम संकेतक **Learning Indicators**	सुझावात्मक प्रक्रिया **Suggestive Process**	अवधि **Duration**
• मध्य काल का अध्ययन करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले स्रोतों के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। • मध्यकाल के दौरान हुए महत्वपूर्ण ऐतिहासिक बदलावों को स्थान विशेष के साथ जोड़कर देखते हैं।	**पाठ 1 कहाँ, कब और कैसे?**	• मानचित्र के आधार पर 11वीं से 17वीं सदी के बीच भारत की राजनीतिक स्थिति के बारे बताते हैं। • भारत के लिए हिन्दुस्तान नाम का प्रयोग एवं बिहार के नामकरण के बारे मे जानते हैं। • प्रौद्यौगिकी का अर्थ, मध्यकाल में प्रौद्योगिकी में बदलाव के महत्व एवं विशेषताओं तथा उपयोग को जानते हैं– जैसे : घटी–यंत्र, रहट, चरखे, घुनकी कागज, कुतुबनुमा। सैन्य तकनीक के क्षेत्र में लोहे के रकाब एवं नाल के उपयोग से युद्ध तकनीक में होने वाले परिवर्तन को बताते हैं। • इस्लाम के भारत में आगमन के महत्व एवं भूमिका की जानकारी है। • अरब लोगों के साथ सम्पर्क द्वारा भारत की रीति–रिवाज, खान–पान, पोशाक में	• मानचित्र के माध्यम से विभिन्न काल के क्षेत्र विस्तार के अंतर को शिक्षक द्वारा स्पष्ट करना। • नामकरण के संदर्भ में समूह चर्चा छात्रों द्वारा। • प्रौद्योगिकी का अवलोकन एवं उसकी विशेषता पर शिक्षक द्वारा चर्चा। • शिक्षक द्वारा रीति–रिवाज, खान–पान पहनावा आदि पर चर्चा। • समूह विभाजन द्वारा गंगा–जमुनी संस्कृति पर चर्चा। • ऐतिहासिक साक्ष्यों का अवलोकन, वर्गीकरण, विश्लेषण–(शिक्षक द्वारा)	2 कार्य दिवसों में

		होने वाले परिवर्तन को बताते हैं। • गंगा–जमुनी संस्कृति की अवधारणा के बारे में बताते हैं। • इतिहास के अध्ययन के साधनों–साहित्यिक एवं पुरातात्विक स्रोतों का वर्गीकरण करते हैं। • एक ही ऐतिहासिक घटनाओं एंव तथ्यों पर दो भिन्न इतिहासकारों के विचारों को परिस्थिति के आलोक में विश्लेषण करना। उदाहरणार्थ– मुहम्मद–बिन–तुगलक के द्वारा राजधानी परिवर्तन के संदर्भ में बरनी एंव इसामी के विचारों का विश्लेषण करते हैं।	• इतिहासकारों के विचारों का समूह विभाजन कर विश्लेषण।	
• मध्यकाल के दौरान सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिर्वतनों का विश्लेषण करते हैं। • सैन्य विषयों एवं प्रशासनिक संरचना में बदलाव से उत्पन्न परिस्थितियों की जानकारी है। • तुर्को के भारत आगमन की परिस्थितियों से अवगत हैं। • चोल एवं पालकालीन शासकों की उपलब्धियों से छात्र परिचित है।	**पाठ–2 नए राज्य एवं राजाओं का उदय**	• 7वीं–12वीं सदी के बीच भारत के तत्कालीन राजवंशों के साम्राज्य विस्तार एवं प्रशासनिक केन्द्र के बारे में जानते हैं। • सामंतवादी व्यवस्था की अवधारणा एवं प्रक्रिया को समझते हैं। • केन्द्रीय प्रशासन के पदाधिकारियों के नाम एवं उनके कार्यों को जानते हैं। • राज्य एवं राजा के आज के साधनों एवं खर्च के बारे में जानते हैं। • कन्नौज के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष के महत्व एवं शासकों की भूमिका को जानते हैं। • महमूद गजनी के भारत पर आक्रमण के कारण एवं प्रभावों का विश्लेषण करते हैं। • चोल राजाओं की उपलब्धियों को बताते	• 7वीं से 12वीं सदी के मानचित्रों का अवलोकन कर तत्कालीन राजवंशों के संदर्भ में सामूहिक चर्चा। (शिक्षक छात्र द्वारा) • आज की सामाजिक व्यवस्था के साथ सामंतवादी व्यवस्था की तुलनात्मक व्याख्या किया जा सकता है। (छात्र द्वारा) • प्रशासनिक पदाधिकारियों एवं उनके कार्यो को चार्ट पेपर पर छात्रों द्वारा सूचीकरण। • आज के आय प्रणाली के साथ तत्कालीन राज्य एवं	2 कार्य दिवसों में

		हैं। • चोल प्रशासनिक अधिकारियों के नाम एवं कार्य की जानकारी है। • चोल प्रशासनिक इकाईयों– राष्ट्र, मण्डल, कोट्टम, नाडू ,कुर्रम की स्थिति की व्याख्या करते हैं। • चोलों के ग्राम स्वशासन में उत्तरामेरू अभिलेख के महत्व के बारे में बताते हैं। • पालकालीन शासकों की उपलब्धियों तथा शिक्षा एवं कला के क्षेत्र में योगदान के बारे में बताते हैं।	राजा के आय स्रोतों का तुलनात्मक व्याख्या। (छात्र द्वारा) • कन्नौज की भौगोलिक स्थिति का मानचित्र पर रेखांकन करते हुए राजनीतिक स्थिति का विश्लेषण शिक्षक के द्वारा किया जा सकता है। • महमूद गजनी एवं मुहम्मद गोरी के भारत पर आक्रमण के उद्देश्य एवं महत्व के अंतर को स्पष्ट करना। (षिक्षक द्वारा) • चोल शासकों, पदाधिकारियों, प्रशासनिक इकाईयों का विभाजन आदि का सूचीकरण–(छात्र द्वारा)	
• सल्तनतकालीन शासकों की उपलब्धियों का वर्णन करते हैं। • शासकों द्वारा अपनाए गए प्रशासनिक उपायों और रणनीतियों का विश्लेषण करते हैं। • विभिन्न शासकों की नीतियों की तुलनात्मक व्याख्या करते हैं। • सल्तनतकालीन कृषि	**पाठ–3 : तुर्क अफगान शासक**	• व्यापार–वाणिज्य के केन्द्र के रूप में दिल्ली के विकास को जानते हैं। • दिल्ली सल्तनत के शासकों (प्रारंभिक तुर्क शासक (ममलुक) तुगलक, लोदी राजवंश) की सूची और उनका वर्णन करते हैं। • मानचित्र के आधार पर विभिन्न राजवंशों एवं शासकों के साम्राज्य विस्तार का मूल्यांकन करते हैं। • केन्द्रीय प्रशासन में वजीर, आरिज–ए–मुमालिक, वकील–ए–दर, काजी, दीवान–ए–इंशा,	• तत्कालीन व्यापार–वाणिज्य पर शिक्षक द्वारा चर्चा। • सल्तनत कालीन वंशों, शासकों का सूचीकरण। (छात्र द्वारा) • मानचित्र के आधार पर शासकों के साम्राज्य विस्तार का अवलोकन एवं तुलनात्मक अध्ययन । (शिक्षक द्वारा)	3 कार्य दिवसों में

व्यवस्था से अवगत है।		वरीद–ए–मुमालिक के कार्यों को जानते हैं। • स्थानीय प्रशासन में शिकदार, फौजदार, चौधरी, खुत, मुकदम एवं पटवारी की भूमिका को जानते हैं। • प्रशासन में अक्ता व्यवस्था में वली या मुक्ती के अधिकार एवं दायित्व तथा राजस्व संबंधी कार्यों की व्याख्या करते हैं। • अलाउद्दीन खिलजी के बाजार–मूल्य नियंत्रण के कारणों, फैलाव क्षेत्र और लाभार्थियों के बारे में अपने विचार रखते हैं। • मुहम्मद–बिन–तुगलक : एक प्रयोगधर्मी शासक के रूप में इसके निर्णयों की ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर विवेचना करते हैं। • सल्तनत काल में खेती के साधन, किसानों की स्थिति तथा शासकों द्वारा कृषि व्यवस्था में सुधार व सिचाई व्यवस्था के संदर्भ में अपने विचार रखते हैं।	• सल्तनतकालीन प्रशासनिक विभाग एवं उनके पदाधिकारियों का सूचीकरण कर उनके कार्यो पर सामूहिक चर्चा। (शिक्षक–छात्र द्वारा) • बाजार–व्यवस्था का आज के बाजार मूल्य के साथ तुलनात्मक विवेचना। (शिक्षक–छात्र द्वारा) • मुहम्मद–बिन–तुगलक के प्रयोगों के संदर्भ में सामूहिक चर्चा। (षिक्षक–छात्र द्वारा) • तत्कालीन किसानों की आज के किसानों की स्थिति के संदर्भ में जोड़कर चर्चा करना। (षिक्षक–छात्र द्वारा)	
• मुगलकालीन शासकों अकबर जहाँगीर, शाहजहाँ, औरंगजेब के विषय में जानकारी है। • शेरशाह मुगल संबंध के बारे में बतलाते हैं। • विभिन्न शासकों की नीतियों की तुलना करते	**पाठ–4 : मुगल साम्राज्य**	• बाबर के समय भारत की राजनैतिक स्थिति एवं मुगल विजय के बारे में जानते हैं। • हुमायूँ शेरशाह संघर्ष एवं शेरशाह की रणनीति का वर्णन करते हैं। • शेरशाह के सुधार कार्य की चर्चा करते हैं।	• मुगलवंश के शासकों एवं उनके राज्य काल को चार्ट पेपर के माध्यम से प्रदर्शित करना। (छात्र द्वारा) • मानचित्र के माध्यम से सभी शासकों के साम्राज्य विस्तार का अवलोकन एवं तुलनात्मक अध्ययन।	3 कार्य दिवसों में

हैं। • सम्राट अकबर की बहुसंख्यकों के प्रति नीति से अवगत है।		• अकबर के राज्यारोहण की स्थिति एवं मुगल वंश के पुनर्स्थापना की स्थिति को जानते हैं। • हिन्दुओं के प्रति अकबर की नीति को बताते हैं। • मनसबदारी, जागीदारी को विश्लेषित करते हैं। • मुगलकालीन भूराजस्व व्यवस्था को जानते हैं। • अकबर एवं औरंगजेब की धार्मिक नीति के संबंध में जानते हैं। • मुगल साम्राज्य के पतन की परिस्थितियों/कारणों की व्याख्या करते हैं।	(शिक्षक–छात्र द्वारा) • समूह चर्चा :– मुगल–अफगान धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक नीतियों पर। (शिक्षक–छात्र द्वारा) • दीन–ए–इलाही' एवं 'सुलह–ए–कुल' पर समूह चर्चा। (शिक्षक–छात्र द्वारा) • तुलनाः– मुगल–अफगान राजस्व नीति की वर्तमान राजस्व नीति के साथ (शिक्षक–छात्र द्वारा) • पारिभाषिक शब्दों पर समूह चर्चा(शिक्षक छात्र द्वारा)	
• मंदिर, मकबरों और मस्जिदों के निर्माण में अपनाई गयी विशिष्ट शैलियों और तकनीकों का वर्णन करते हैं। • इमारतों में प्रयोग होने वाली सामग्रियों को जानते हैं। • दक्षिण भारत में मंदिरों में सामाजिक जीवन के महत्व को बतलाते हैं। • ताजमहल की स्थापत्य शैली को बताते हैं। • शेरशाह के मकबरे की	**पाठ–5 : शक्ति के प्रतीक के रूप में वास्तुकला किले एवं धार्मिक स्थल**	• दक्षिण भारतीय मंदिर– निर्माण शैली की विशेषता को बताते हैं। • मेहराब, गुंबद एवं अन्य इस्लामिक तकनीकों के बारे में जानते हैं। • मीनाक्षी और सुन्दरेश्वर मंदिर के बीच समानता और अंतर को बताते हैं। • आरंभिक इस्लामिक संरचना जैसेः कुत्तुबमीनार, अलाई दरवाजा, अटाला मस्जिद, गयासुद्दीन के मकबरे की निर्माण शैली के बारे में बतलाते हैं। • मुगलकालीन इमारतों में बागों की योजना को स्पष्ट करते हैं। • शाहजहाँ काल में स्थापत्य कला के विकास के लिए उत्तरदायी परिस्थितियों	• पाठ्य–पुस्तक में दिये गए विवरणों के आधार पर मध्यकालीन राजनैतिक, धार्मिक और आर्थिक स्थिति पर समूह चर्चा। (शिक्षक–छात्र द्वारा) • इमारतों का तुलनात्मक अध्ययनः मंदिर, मस्जिद और मकबरे। (शिक्षक–छात्र द्वारा) • शाहजहाँ कालीन राजनीतिक, आर्थिक स्थिति पर समूह चर्चा। (शिक्षक–छात्र द्वारा)	2 कार्य दिवसों में

निर्माण शैली को बताते हैं।		की व्याख्या करते हैं। • बिहार में इस्लामिक इमारतों जैसे मलिक बयाँ का मकबरा, शाहदौलत का मकबरा के निर्माण शैली के बारे में बताते हैं।	• तुलनात्मक अध्ययनः– इमारतों में प्रयुक्त सामग्रियों का वर्तमान में प्रयुक्त होने वाली सामग्रियों के साथ। (शिक्षक–छात्र द्वारा)	
• मध्यकाल में नगरों के उत्थान एवं नगरीय जीवन की विशेषताओं की जानकारी है। • नगरों में गैर कृषक आर्थिक गतिविधियों की प्रगति एवं ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया की समझ रखते हैं। • ऐतिहासिक स्रोत के रूप में विदेशी यात्रियों के विवरण का अध्ययन सामग्री के रूप में उपयोगिता की समझ है। • पुर्तगाली यात्री वास्कोडिगामा के बारे में जानते हैं। • ईस्ट इण्डिया कम्पनी की व्यापारिक कार्य प्रणाली से अवगत है।	**पाठ–6ः शहर, व्यापारी एवं कारीगर**	• शहरों के विभिन्न प्रकारों–प्रशासनिक, मंदिर, वाणिज्यिक, बन्दरगाह नगर के विकास के कारण, स्थिति एवं विशेषताओं को बताते हैं। • शहरों की बनावट, उसमें रहने वाले लोग एवं उसकी स्थिति की विवेचना करते हैं। • भारत के पश्चिमी एवं पूर्वी समुद्र तट से आयात– निर्यात होने वाले व्यापारिक वस्तुओं, बन्दरगाहों, अंतर्राष्ट्रीय मार्गों, बाजारों की सूची बनाते हैं एवं मानचित्र पर अंकन करते हैं। • मध्यकालीन कारीगर द्वारा उत्पादित वस्तुओं एवं निर्माण तकनीक की विशेषताओं के बारे में बताते हैं। • मूर्तिकला के क्षेत्र में लुप्त मोम तकनीक के बारे में बताते हैं। • 1498 ई0 में पुर्तगाली यात्री वास्कोडिगामा की भारत यात्रा की जानकारी रखते हैं। • ईस्ट इंडिया कम्पनी की व्यापारिक कार्य प्रणाली को जानते हैं। • नए शहरों के विकास के संदर्भ में ईस्ट इंडिया कम्पनी के किलेबंद कोठियों के	• शहरों के विकास एवं शहरीकरण की प्रक्रिया पर चर्चा। मध्य कालीन शहर के रूप में पटना का केस स्टडी। (शिक्षक द्वारा) • आयात–निर्यात होने वाली वस्तुओं का सूचीकरण एवं वर्गीकरण। (छात्र द्वारा) • मानचित्र के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं के आवागमन हेतु आन्तरिक एवं विदेशी मार्ग पर चर्चा एवं अंकन। (शिक्षक द्वारा) • वस्तु निर्माण प्रक्रिया का अवलोकन एवं प्रोजेक्ट कार्य। उदाहरणार्थ– अपने गाँव या शहर में काम करने वाले कारीगरों द्वारा वस्तु का निर्माण किस तरीके से करते हैं। (प्रोजेक्ट कार्य–छात्र द्वारा) • भारत में नये व्यापारी वर्ग का आगमन (यूरोपीय	2 कार्य दिवसों में

		महत्व के बारे में व्याख्या करते हैं।	व्यापारियों के संदर्भ में) पर शिक्षक द्वारा चर्चा । • शहरों के बदलते हुए स्वरूप पर शिक्षक द्वारा चर्चा।	
• उन कारकों एवं परिस्थितियों की विवेचना, व्याख्या एवं विश्लेषण करते हैं जिससे नए धार्मिक विचारों एवं आंदोलनों (भक्ति एवं सूफी) का उद्‌भव हुआ। • भक्ति और सूफी संतों के काव्यों गीतों चित्रों में कही गई विचारों एवं उपदेशों का तत्कालीन सामाजिक व धार्मिक व्यवस्था को समझने का प्रयास करता है।	**पाठ–7: सामाजिक–सांस्कृतिक विकास**	• बाहर से भारत आने वाले शासकों एवं तुर्क सत्ता की स्थापना का भारत पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में जानते हैं। • 13वीं सदी तक इस्लाम का भारत में विस्तार को बताते हैं। • इस्लामी रीति–रिवाज, धर्म, शिल्प, पोशाक, खान–पान, भाषा जिसे भारतीयों ने अपनाया, के बारे में जानते हैं। • इस्लाम पर हिन्दू–संस्कृति के प्रभाव का विश्लेषण करते हैं। • भक्ति का अर्थ समझते हैं। • मध्यकालीन भारत में भक्ति एवं सूफी आंदोलन के उद्‌भव एवं विकास की परिस्थितियों का विश्लेषण एवं व्याख्या करते हैं। • भक्ति आंदोलन के संतों की सूचीकरण कर उनके दार्शनिक विचारों उपदेशों का वणन करते हैं– =दक्षिण भारत के अलवार एवं नयनार संतों =शंकराचार्य के अद्वैतवादी सिद्वांत महाराष्ट्र के भक्ति आंदोलन के संतों के सामाजिक–धार्मिक विचार =रामभक्ति परम्परा के वैष्णव संत–रामानंद	• इस्लाम के अनुयायियों के रहन–सहन, खान–पान, सांस्कृतिक जीवन का अन्य लोगों पर पड़ने वाले प्रभावों का अवलोकन, विश्लेषण एवं तुलनात्मक अध्ययन व चर्चा। (शिक्षक–छात्र द्वारा) • भारत के मानचित्र पर इस्लाम के आगमन एवं उनके विस्तार का अंकन। (शिक्षक द्वारा) • अलबरूनी का हिन्दुओं के संदर्भ में विवेचना एवं चर्चा।(शिक्षक के द्वारा) • भक्ति आंदोलन के देवी–देवताओं एवं सूफी संतों का सूचीकरण–(छात्र द्वारा) • भक्ति एवं सूफी संतों के दार्शनिक विचार धारा पर समूह में चर्चा। (शिक्षक द्वारा)	3 कार्य दिवसों में

		एवं तुलसीदास • सूफीवाद की अवधारणा एवं विकास के बारे में बताते हैं। • सूफी संतों एवं भारत में लोकप्रिय सिलसिलों, विशेषकर–बिहार के फिरदौसी सिलसिले एवं दरिया साहेब के विचारों की चर्चा करते हैं।		
• परवर्त्ती मुगल राज्यों, क्षेत्रीय शक्तियों के उदय की परिस्थितियों एवं उसके महत्व तथा परिणाम की व्याख्या करते हैं। • राष्ट्रीयता की भावना की पृष्ठ भूमि को समझते हैं। • अठारहवीं सदी की राजनैतिक परिस्थिति के बारे में बताते हैं। • शिवाजी एवं उनके द्वारा अपनाई गयी व्यवस्था का विश्लेषण करते हैं।	**पाठ–9 : अठारहवीं सदी में नई राजनैतिक संरचनाएँ**	• परवर्ती मुगल साम्राज्य के बाद उदित राज्यों का आधार, नाम एवं शासन सहित बताते हैं। • बंगाल हैदराबाद एवं अवध में अपनायी गयी व्यवस्था का विश्लेषण करते हैं। • स्वतंत्र राजपूत राज्यों के उदय की व्याख्या करते हैं। • अजमेर के शासक सवाई जयसिंह के कार्यो का विश्लेषण करते हैं। • मराठा राज्य के उदय की परिस्थितियों का वर्णन करते हैं। • चौथ एवं सरदेशमुखी के बारे में बताते हैं। • औरंगजेब शिवाजी संघर्ष की स्थिति का विश्लेषण करते हैं। • मराठा परिसंघबनने के कारण प्रभाव तथा पानीपत की तीसरी लड़ाई के परिणाम को बताते हैं। • जाट एवं सिक्ख समुदाय के राजनैतिक शक्ति के रूप में स्थापित होने का विलेषण करते हैं।	• मानचित्र पर अठारहवीं सदी के राज्यों की स्थिति का आकलन एवं मूल्यांकन। (शिक्षक द्वारा) • तत्कालीन भूराजस्व व्यवस्था का आज की भू–राजस्व व्यवस्था से तुलनात्मक अध्ययन। (शिक्षक द्वारा) • पाठ्य पुस्तक के आधार पर क्षेत्रीय राज्यों का परवर्ती मुगल शासकों से संबंध पर चर्चा (शिक्षक द्वारा) • राजपूत राज्यों का मानचित्र पर अंकन एवं उसकी प्रशासनिक और राजनैतिक व्यवस्था पर सामूहिक चर्चा। (शिक्षक–छात्र द्वारा) • जंतर–मंतर का प्रदर्श दिखाकर जय सिंह के व्यक्तित्व का मूल्यांकन। (शिक्षक द्वारा)	2 कार्य दिवसों में

		• क्षेत्रीय राज्यों के उदय से राष्ट्रीयता की भावना पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करते हैं।	• मानचित्र पर मराठा राज्य के विस्तार का अध्ययन (शिक्षक द्वारा) • शिवाजी के प्रशासनिक व्यवस्था 'अष्ट प्रधान', चौथ एवं सरदेशमुखी' पर चर्चा।	
	पुनरावृत्ति			**1 कार्य दिवस में**

बिहार सरकार

Catch-Up Course

सेतु सामग्री

कक्षा–VIII

विषय–सामाजिक विज्ञान

सहयोग– बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, बिहार

अकादमिक सहयोग– यूनिसेफ, बिहार

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार, पटना द्वारा विकसित

शैक्षणिक सत्र 2021–22 के लिए तीन महीनों की सेतु सामग्री (Catch up Course)

कक्षाः– 8 (कक्षाः– 7 के बच्चे जो सत्र 2021–22 में कक्षा 8 में पढ़ रहे है उनके लिए 60 कार्य दिवसों की सामग्री)

विषयः– सामाजिक विज्ञान (भूगोल)

समान अधिगम प्रतिफल के आधार पर पाठों को समेकित कर कार्य दिवसों के आधार पर विभक्त किया गया है। मूल पाठों की संख्या 13 है जिसे समेकन के पश्चात कुल पाँच (5) अध्यायों के अंतर्गत रखा गया है।

अधिगम प्रतिफल	क्रम संख्या	पाठक्रम संख्या	अध्याय	अवधि
• पृथ्वी की प्रमुख आंतरिक परत और चट्टान एवं खनिज की जानकारी है।	1.	1. 2.	पृथ्वी के अंदर ताँक–झाँक चट्टान एवं खनिज	5 कार्य दिवसों में
• स्थलरूपों के बनने के विभिन्न कारकों एवं विभिन्न भू–आकृतियों को जानते है। भूकम्प और ज्वालामुखी से आने वाली आपदाओं के दौरान किए गए बचाव कार्य के बारे में जानते हैं।	2.	3.	आंतरिक बल एवं उनसे बनने वाली भू–आकृतियाँ	4 कार्य दिवसों में
• वायुमंडल के विभिन्न परत एवं वायुमंडल के संघटन एवं संरचना का वर्णन कर सकते हैं।	3.	4.	वायुमंडल एव इसका संघटन	2 कार्य दिवसों में
• पर्यावरण एवं उसके सभी तथ्यों से परिचित हैं और मानव पर्यावरण अंतःक्रिया– लद्दाख, थार, बिहार, केरल से परिचित हैं।	4.	5. 6. 7. 8. 9. 10. 11.	बिन पानी सब सून हमारा पर्यावरण जीवन का आधार पर्यावरण मानव पर्यावरण अंतःक्रियाः लद्दाख प्रदेश में जन–जीवन मानव पर्यावरण अंतःक्रियाः थार प्रदेश में जन–जीवन मानव पर्यावरण अंतःक्रियाः अपना प्रदेश बिहार मानव पर्यावरण अंतःक्रियाः तटीय प्रदेश केरल में जन–जीवन	5 कार्य दिवसों में
• मौसम एवं जलवायु की समझ रखते हैं।	5.	12. 13.	मौसम और जलवायु मौसम संबंधी उपकरण	4 कार्य दिवसों में

कक्षा – 8 विषय – भूगोल

सीखने का प्रतिफल	अध्याय	अधिगम संकेतक	सुझावात्मक प्रक्रिया	अवधि
Learning Outcome	Chapters	Learning Indicators	Suggestive process	Duration
• पृथ्वी की प्रमुख आंतरिक परतों के बारे में बताते हैं। • खनिजों की सामान्य समझ के साथ–साथ दैनिक जीवन में उसके उपयोग के बारे में जानते हैं। • चट्टानों के बनने की प्रक्रिया और चट्टानों के प्रकार के बारे में बताते हैं।	1. **(A) पृथ्वी के अंदर ताँक–झाँक** **(B). चट्टान एवं खनिज**	• पृथ्वी के आंतरिक परतों के बारें में जानने के साथ–साथ आंतरिक क्रियाओं की भी जानकारी रखते हैं। • मानव जीवन हेतु भू–पटल के महत्व की जानकारी हैं। • पृथ्वी के परतों का विभाजन तथा उसके अंतर को विश्लेषित कर सकते हैं। • पृथ्वी की संरचना में विभिन्न परतों की अवस्थिति के साथ क्रोड में तत्वों की अवस्था की जानकारी है। • खनिज के बारें में जानते है और दैनिक जीवन में उसके महत्व को बताते हैं। • जीवाश्म का वर्णन करते हैं। • खनिजों के संरक्षण के महत्व को जानते हैं।	• बच्चों से पृथ्वी पर दिखने वाले वस्तुओं, चीजों के बारे में बातचीत करते हुए भू–पर्पटी की चर्चा शुरू कर सकते हैं। • श्यामपट्ट पर रंगीन चॉक की मदद से पृथ्वी की विभिन्न परतों को दर्शाया जा सकता है। • नारियल, पृथ्वी के परतों को समझाने के लिए बेहतर उदाहरण के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। • परिवेश में पाए जाने वाले विभिन्न खनिज पदार्थो का अवलोकन कराया जा सकता है। • बिजली के पंखे, आयरन आदि में अभ्रक का उपयोग होता है, इनका प्रदर्शन कराना कक्षा में आसान होगा।	5 कार्य दिवसो में
• स्थलरूपों के बनने की प्रक्रिया के विभिन्न कारकों के बारे में जानते हैं। • विभिन्न भू–आकृतियों को जानते और पहचानते हैं। • भूकम्प और ज्वालामुखी होने के कारण को जानते	2. **आंतरिक बल एवं उनसे बनने वाली भू–आकृतियाँ**	• भूकम्प के कारणों को जानने के साथ–साथ भूकम्प के कारण बनने वाली भू–आकृतियों जैसे – पर्वत, पठार, मैदान के बारे में जानते हैं। • पृथ्वी पर होने वाले परिवर्तनों एवं घटनाओं को दैनिक जीवन के साथ जोड़कर देख सकते हैं।	• भूकम्प की चर्चा करते हुए टेबल पर ग्लास में पानी रख कर उसे नीचे से हिलाया जा सकता है और पानी में होनेवाले कम्पन को दिखा कर भूकम्प के बारे में समझाया जा सकता है। • विभिन्न भू–आकृतियों का चित्र	4 कार्य दिवसो में

है और इनके फलस्वरूप बने भू–आकृतियों के बारे में जानते हैं। • भूकम्प और ज्वालामुखी से आनेवाले विभिन्न आपदाओं के दौरान किए जाने वाले बचाव कार्य के बारे में जानते हैं।		• पर्वत एवं पठार के प्रकार को जानते हैं • भूकम्प एवं ज्वालामुखी को आपदा के संदर्भ में जानते हैं।	श्यामपट्ट पर बनाया जा सकता है। • भारत में भूकम्प के विभिन्न क्षेत्रों को अलग–अलग रंगों से दर्शाने का कार्य परियोजना कार्य के माध्यम से कराया जा सकता हैं। • शिक्षक भूकम्पमापी यंत्र की चर्चा/प्रदर्शन से भी भूकम्प की अवधारणा स्पष्ट कर सकते हैं। • यूट्यूब की मदद से ज्वालामुखी को दिखाया जा सकता है।	
• वायुमण्डल की विभिन्न परतों को जानते हैं। • वायुमण्डल के संघटन एवं संरचना का वर्णन कर सकते हैं। • वायुमण्डल में घटने वाली विभिन्न घटनाओं और उससे संबंधित परतों के बारे में जानते हैं। • ग्रीन हाउस गैस के प्रभाव को समझते हैं। • वायुमण्डल का मानव जीवन से संबंध का वर्णन कर सकते हैं।	**3. वायुमण्डल एवं इसका संघटन**	• वायुमण्डल में मौजूद गैसों एवं उसकी मात्रा को जानते हैं। • वायुमण्डल के विभिन्न परतों में घटित होने वाले घटनाओं जैसे– मौसम बदलाव, उल्का पिंड का गिरना, ओजोन परत आदि को जानते हैं। • वायुमण्डल को जानने के साथ–साथ उनके परतों को भी जानते हैं। • ग्रीन हाउस गैस तथा उनके प्रभाव को समझते हैं। • वायुमण्डल एवं मानव जीवन के अन्तर्सम्बन्धों के प्रति संवेदनशील हैं।	• पतंग, गुब्बारा, हवाई जहाज, सेटेलाइट, के काम करने के स्थान को इंगित करते हुए वायुमण्डल के विभिन्न परतों की चर्चा की जा सकती है। • वायुमण्डल में मौजूद विभिन्न लाभदायी एवं नुकसानप्रद गैसों की चर्चा से पाठ को आगे बढ़ाया जा सकता है। • वायुमण्डल के विभिन्न परतों की व्याख्या करते हुए पृथ्वी से विभिन्न परतों की ऊँचाई बताई जा सकती है। • वायुमण्डल का मानव जीवन और प्रकृति से संबंध की चर्चा करके वायुमण्डल के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ावा दिया जा सकता हैं।	2 कार्य दिवसों में

• पर्यावरण एवं उसमें समाहित सभी तथ्यों के बारे में जानते हैं। • पर्यावरण के प्रदूषण से बचाव के प्रति जागरूक हैं। • देश की विभिन्न जलवायविक परिस्थितियों से परिचित है और इस वजह से उत्पन्न विभिन्नताओं को जानते हैं। • बिहार के भौगोलिक अवस्थाओं एवं उपज क्षेत्रों से परिचित हैं राज्य की विशिष्टताओं को भी जानते हैं।	4. **A. हमारा पर्यावरण** **B. जीवन का आधार पर्यावरण** **C. मानव पर्यावरण अंतः क्रिया– लद्दाख, थार प्रदेश, बिहार प्रदेश, केरल** **नोटः– पाठ पाँच– 'बिन पानी सब सून' वर्ग आठ के इकाई एक–क. जल संसाधन में समाहित कर दिया गया हैं।**	• पर्यावरण एवं उसके पारितंत्र को जानते हैं। • प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं को संरक्षण करते हैं। • बिहार की विशिष्टताओ के नाम बता सकते हैं। • लद्दाख के फसलों उत्पादनों के नाम जानते है, याक को जानते, पहचानते हैं। • केरल, राजस्थान को मानचित्र में चिह्नित कर लेते हैं, वहाँ का पहनावा, संगीत, नृत्य, खेल आदि को जान लेते हैं।	• आस–पास के परिवेश के अवलोकन के लिए समूहवार बच्चो को ले जाऐंगें। • प्राकृतिक चीजों की सूची बनाने को कहा जा सकता है। • प्रदूषण के कारणों एवं निदान में पक्ष–विपक्ष बनाकर चर्चा – परिचर्चा करायी जा सकती है। • मानचित्र पर बिहार, केरल, राजस्थान, लद्दाख का अवलोकन कराके उनकी विशेषताओं पर चर्चा की जा सकती है। • यूट्यूब की मदद से केरल, बिहार के महत्वपूर्ण स्थलों, पर्वों को दिखाया जा सकता है। • यूट्यूब पर लद्दाख एवं राजस्थान की संस्कृति, खान–पान, पहनावा आदि को दिखाया जा सकता है। • मानव निर्मित एवं प्रकृति प्रदत्त चीजों को सूचीबद्ध कर सकते हैं। • अगर पेड़ ना हो/ जल ना हो/ पहाड़ ना हो तो क्या होगा ऐसे प्रश्नों से पर्यावरण का महत्व समझाया जा सकता है। • ऊँट, लिट्टी–चोखा, लीची,	

			कथकली, नौकायन आदि की चर्चा कर राज्य विशेष की चर्चा की शुरुआत की जा सकती है।	
• मौसम एवं जलवायु के तत्व, पवन, आर्द्रता तापमान तथा वर्षा की सामान्य जानकारी है। • मौसम एवं जलवायु की जानकारी देने में सहायक यंत्रों की सामान्य जानकारी है तथा उसके उपयोग को जानते हैं। • मौसम और जलवायु में अंतर बता सकते है। • जलवायु को प्रभावित करने वाले कारको को जानते हैं। • थर्मामीटर देखना और दिशासूचक यंत्र की गतिविधि पहचानते है।	5. **A. मौसम और जलवायु** B. **मौसम संबंधी उपकरण**	• मौसम को परिभाषित करने के साथ ही मौसम में स्थान और समय के महत्व को समझते हैं। • जलवायु को परिभाषित करने के साथ ही जलवायु के निर्धारण के कारक बताते हैं। • पृथ्वी पर तापमान के वितरण के आधार बताते हैं। • पवन की परिभाषा, प्रकार, उत्पन्न होने के कारण तथा अपने क्षेत्र में बहने वाले पवनों के बारे में जानते हैं। • चक्रवात एवं प्रति चक्रवात को बताते है तथा भारत में उत्पन्न होने वाले चक्रवातों के क्षेत्र बताते हैं। • मौसम की भविष्यवाणी के बारे में जानते हैं। • दैनिक तापमान तथा शारीरिक तापमान मापक की इकाई बताते हैं। • अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान का अर्थ समझते हैं। • वर्षा मापक यंत्र के बारे जानते हैं • मौसम विज्ञान केन्द्र के बारे में जानते हैं।	• जिनमें मौसम शब्द आते हैं, उन गीतों को चिह्नित करवाएँ और उन पंक्तियों से मौसम के बदलने के अर्थ को परिभाषित करें। • LANDFORM जैसे संक्षिप्ताक्षरों की व्याख्या करते हुए जलवायु को स्पष्ट करें। • टेलिविजन और रेडियो के मौसम संबंधी समाचारों की चर्चा करें। • थर्मामीटर, दिशासूचक यंत्र का अवलोकन कराकर चर्चा करें। • वायु की दिशा ज्ञात करने के स्थानीय तरीकों को बताया जा सकता है।	4 कार्य दिवसो में

बिहार सरकार

Catch-Up Course

सेतु सामग्री

कक्षा– VIII

विषय–सामाजिक विज्ञान

सहयोग– बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, बिहार

अकादमिक सहयोग– यूनिसेफ, बिहार

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार, पटना द्वारा विकसित

शैक्षणिक सत्र 2021–2022 के लिए तीन महीनों की सेतु सामग्री (Catch-up Course)

कक्षा VIII (कक्षा VII के बच्चे जो सत्र 2021–2022 में कक्षा VIII में पढ़ रहे हैं, उनके लिए 60 कार्य दिवसों की सामग्री)

विषय– सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन

समान अधिगम प्रतिफल के आधार पर पाठों को समेकित कर कार्य दिवसों के आधार पर विभक्त किया गया है। मूल पाठों की संख्या 12 (बारह) है जिसे समेकन के पश्चात 6 (छः) अध्यायों के अन्तर्गत रखा गया है।

अधिगम प्रतिफल	क्रम संख्या	पाठ क्रम संख्या	पाठ का नाम	अवधि
• लोकतंत्र में समानता का महत्त्व समझते हुए राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक समानताओं के बीच अंतर स्पष्ट करते हैं।	1.	1.	लोकतंत्र में समानता	2 कार्य दिवसों में
• विधान सभा की चुनाव प्रक्रिया एवं राज्य सरकार की कार्य–प्रणाली को जानते हैं एवं शिक्षा व स्वास्थ्य के क्षेत्र में सरकार की भूमिकाओं से अवगत हैं।	2.	2. 3.	राज्य सरकार शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में सरकार की भूमिका	5 कार्य दिवसों में
• लैंगिक आधार पर व्यवहार में असमानता को बताते हैं और दलित जातियों एवं महिला उत्थान के लिए किए गए संघर्षों को जानते हैं।	3.	4. 5. 11.	समाज में लिंग भेद समानता के लिए महिला संघर्ष समानता के लिए संघर्ष	4 कार्य दिवसों में
• मीडिया का लोकतंत्र पर प्रभावों को समझते हैं और उसके कामकाज की जानकारी रखते हैं।	4.	6.	मीडिया और लोकतंत्र	2 कार्य दिवसों में
• विज्ञापन के व्यापक विस्तार एवं जनता पर हुए प्रभाव को जानते हैं।	5.	7.	विज्ञापन की समझ	2 कार्य दिवसों में
• विभिन्न प्रकार के बाजारों को जानते हैं और फसलों के उपभोक्ता तक पहुँचने की प्रक्रिया से अवगत हैं।	6.	8. 9. 10.	आस–पास के बाजार बाजार शृंखला चलें मंडी घूमने	5 कार्य दिवसों में

नोट :– पाठ 12– 'सड़क सुरक्षा उपाय' से बच्चों को कक्षा 6 में अवगत कराया गया है।

कक्षा VIII

विषय– सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन

सीखने का प्रतिफल	अध्याय	अधिगम संकेतक	सुझावात्मक प्रक्रिया	अवधि
Learning Outcomes	Chapters	Learning Indicators	Suggestive process	Duration
● लोकतंत्र में समानता के महत्त्व को जानते हैं। ● राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक समानताओं के बीच अंतर स्पष्ट करते हैं। ● समानता के अधिकार के संदर्भ में अपने क्षेत्र की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों की व्याख्या करते हैं।	**अध्याय –1** **लोकतंत्र में समानता**	● लोकतंत्र में समानता के महत्त्व को बताते हैं। ● सामाजिक और आर्थिक असमानताओं में अंतर करते हैं। ● बाल संसद और मध्याह्न भोजन योजना से विद्यालय में समानता को जानते हैं। ● विश्व स्तर पर असमानता के मुद्दों को जानते हैं। ● आत्मसम्मान की भावना के प्रति संवेदनशील है।	● पाठ्यपुस्तक में दिए गए पहचान पत्र बनाने हेतु कतार में लगे हुए लोगों के बारे में बताते हुए समानता के अर्थ पर बातचीत कर सकते हैं। ● पाठ्यपुस्तक के आधार पर लोकतंत्र में समानता के अवसर के मुख्य बिंदुओं पर चर्चा कर सकते हैं। ● शिक्षक, बच्चों से राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक असमानताओं पर बातचीत कर सकते हैं। ● बच्चों से आर्थिक एवं सामाजिक असमानता का उदाहरण लिखने हेतु कहा जा सकता है। ● विद्यालय में चेतना सत्र, साफ–सफाई, खेल–कूद, MDM, बाल संसद आदि का उदाहरण देते हुए समानता के बारे में चर्चा कर सकते हैं। ● पाठ्यपुस्तक में पृष्ठ 9 में दिए गए विश्व स्तर पर समानता के मुद्दों की चर्चा कर सकते हैं। ● बच्चों में आत्मसम्मान की भावना जागृत कर सकते हैं।	2 कार्य दिवसों में

• विधानसभा चुनाव की प्रक्रिया का वर्णन करते हैं। • अपने राज्य के विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र को मानचित्र पर पहचानते एवं स्थानीय विधायक का नाम बताते हैं। • सरकार की कार्य प्रणाली से अवगत हैं। • शिक्षा, स्वास्थ्य आदि जनसुविधाओं के प्रति सरकार की भूमिका का वर्णन करते हैं।	**अध्याय – 2** **राज्य सरकार** **अध्याय – 3** **शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में सरकार की भूमिका** **(नोट– अध्याय 2 और 3 को एक साथ बता सकते हैं।)**	• उम्मीदवार एवं पार्टी के बारे में समझते हैं। • विधान सभा, विधान सभा के सदस्यों के निर्वाचन पद्धति के बारे में जानते हैं। • विधान सभा के सदस्यों की चुनाव प्रक्रिया के बारे में जानते हैं। • विधान परिषद के बारे में जानते हैं। • विधान सभा की कार्य प्रणाली के बारे में जानते हैं। • सरकार की कार्य प्रणाली के बारे में जानते हैं। • शिक्षा का महत्व जानते हैं। • शिक्षा का अधिकार कानून के बारे में जानते हैं। • शिक्षा एवं स्वास्थ्य के विकास में सरकार की भूमिका को जानते हैं।	• बच्चे पिछली कक्षा में सरकार के तीन स्तरों के बारे में परिचित हुए हैं तथा स्थानीय सरकार को विस्तार से समझा है। • शिक्षक, बच्चों से स्थानीय विधायक के बारे में चर्चा करते हुए विधान सभा और विधान सभा के सदस्यों की जानकारी दे सकते हैं। • शिक्षक पाठ के आधार पर विधायक के चुनाव की प्रक्रिया की चर्चा कर सकते हैं। • शिक्षक चुनावी सभा की तस्वीर, EVM की फोटो एवं अपने विद्यालय के मतदान केन्द्र की चर्चा कर सकते हैं। • पिछली चुनाव का उदाहरण देते हुए सरकार के गठन को स्पष्ट कर सकते हैं। • बच्चों को पृष्ठ–15 से बिहार का मानचित्र दिखाते हुए अपने विधान सभा क्षेत्र की पहचान करवा सकते हैं। • बच्चों से परियोजना कार्य के रूप में वर्ष 2020 के चुनाव परिणाम की तालिका बनवा सकते हैं। • राज्यपाल एवं विधान परिषद की जानकारी दे सकते हैं। • पाठ में दिए गए उदाहरणों के द्वारा विधानसभा में बहस पर चर्चा कर सकते हैं। • सरकार की कार्य–प्रणाली की चर्चा करने के पश्चात शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में सरकार की भूमिका की चर्चा कर सकते हैं। • शिक्षक, बच्चों से विद्यालय में एवं अपने क्षेत्र में शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में सरकार	2 कार्य दिवसों में .

			द्वारा चलायी जाने वाली योजनाओं की चर्चा कर सकते हैं। • सरकार के द्वारा किए गए शिक्षा एवं स्वास्थ्य की खबर को अखबार से काट कर स्क्रैप नोट बुक में साटते हैं।	
• लड़के लड़कियों के समान विकास की जानकारी है। • परिवार और समाज में लैंगिक विभेद को बताते हैं। • समाज में महिलाओं के सामने आने वाली कठिनाइयों के कारणों और परिणामों का विश्लेषण करते हैं। • विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के योगदान को उपयुक्त उदाहरणों के साथ बताते हैं।	**अध्याय 4** **समाज में लिंग भेद** **अध्याय 5** **समानता के लिए महिला संघर्ष** **अध्याय– 11** **समानता के लिए संघर्ष** • **(नोट– अध्याय 4, 5 एवं 11, समाज में लिंग भेद, समानता के लिए महिला संघर्ष, समानता के लिए संघर्ष तीनों को एक साथ सह–संबंध कर बता सकते हैं।**	• स्त्री और पुरूष के कार्यों के आर्थिक मूल्यों में भिन्नता को बताते हैं। • स्त्री और पुरूष के सामाजिक भूमिका के बारे में बताते हैं। • लिंग भेद के नाकारात्मक पहलुओं को जानते हैं। • महिला आन्दोलनों एवं उसके द्वारा समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को बताते हैं। • महिला आन्दोलनों के द्वारा समाज पर पड़ने वाले प्रभावों को बताते हैं। • सामाजिक समता के प्रति संवेदनशील है।	• शिक्षक, बच्चों से अपने भाई–बहन और माता–पिता द्वारा किए गए कार्यों की सूची तैयार करा सकते हैं। • लड़का–लड़की के जैविक संरचना के अतिरिक्त समाज द्वारा तय लैंगिक भेद की चर्चा सामूहिक रूप से की जा सकती है। • स्त्री और पुरूष के सामाजिक भूमिका पर समाज के प्रभाव की सामूहिक चर्चा कर सकते हैं। • शिक्षक चर्चा द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं कि सामाजिक लिंग भेद के क्या–क्या प्रतिकूल प्रभाव हैं। • पाठ में दिए गए सामाजिक परिवर्तन के लिए चलाए गए महिला आन्दोलन की चर्चा करते हुए समाज में हुए सकारात्मक प्रभाव की चर्चा कर सकते हैं। • सरकार द्वारा महिला उत्थान के लिए किए जा रहे कार्यों की चर्चा कर सकते हैं।	4 कार्य दिवसों में

• मीडिया का लोकतंत्र और जनमत पर प्रभावों को समझते हैं तथा उनके कामकाज की व्याख्या करते हैं।	**अध्याय– 6 मीडिया और लोकतंत्र**	• मीडिया और इसके प्रकारों को जानते हैं। • मीडिया में बदलते तकनीकों की जानकारी है। • जन–जागरूकता में मीडिया के महत्व जानते हैं। • लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका के बारे में जानते हैं।	• पाठ में दिए गए सामाजिक असमानता के खिलाफ महापुरूषों द्वारा किए गए कार्यो की चर्चा कर सकते हैं। • शिक्षक, बच्चों से संचार के विभिन्न माध्यमों की सूची तैयार करवा सकते हैं। • श्रव्य–दृश्य संचार के माध्यम की चर्चा करते हुए सूची तैयार करवा सकते हैं। • मीडिया के द्वारा बच्चों में आ रहे बदलाव की सामूहिक चर्चा कर सकते हैं। • पाठ में दिए गए मीडिया के तकनीक में बदलाव का वर्णन कर सकते हैं। • पाठ के आधार पर मीडिया द्वारा लोगों में जागरूकता की सामूहिक चर्चा कर सकते हैं। • पाठ में दिए गए अखबार के अंश के द्वारा एक खबर की दोनों पहलुओ की सामूहिक चर्चा करा सकते हैं। • बच्चों को कोरोना काल के समय बहुत सारे ऑनलाइन क्लास और दूरदर्शन पर चलाए गए 'मेरा दूरदर्शन, मेरा विद्यालय' का उदाहरण देकर मीडिया के महत्व को बता सकते हैं।	2 कार्य दिवसों में

• विज्ञापन के व्यापक विस्तार का लोकतंत्र एवं जनता पर हुए प्रभाव को जानते हैं। • एक विज्ञापन बनाते हैं।	**अध्याय 7** **विज्ञापन की समझ**	• विज्ञापन के बारे में जानते हैं। • ब्राण्ड के महत्व के बारे में जानते हैं। • विज्ञापन को सामाजिक मूल्यों से जोड़कर देखते हैं। • विज्ञापन का लोकतंत्र पर हुए प्रभाव को जानते हैं।	• शिक्षक बच्चों से अखबार, टी.वी. और मोबाइल में दिए गए विज्ञापन को बताते हुए इसकी अवधारणा को स्पष्ट करते हैं। • संचार माध्यम विज्ञापन पर किस प्रकार निर्भर है, इसका वर्णन कर सकते हैं। • शिक्षक बच्चों से ऐसी वस्तुओं की सूची बनाने को कह सकते हैं जो विज्ञापन देखकर खरीदते हैं। • विज्ञापन के सामाजिक मूल्य की समूह चर्चा कर सकते हैं। • बच्चों को विज्ञापनों से पड़ने वाले प्रभावों के प्रति सजग रहने के लिए प्रेरित करते हैं।	2 कार्य दिवसों में
• विभिन्न प्रकार के बाजारों में अंतर करना एवं वस्तुओं के उपभोक्ता तक पहुँचने की प्रक्रिया को समझते हैं।	**अध्याय 8, 9, 10** **हमारे आस–पास के बाजार, बाजार शृंखला एवं चलें मंडी घूमने** **नोट– पाठ 8, पाठ 9, पाठ 10 को एक साथ बताया जा सकता है।**	• बाजार एवं उनके प्रकारों को जानते हैं। • विभिन्न प्रकार के दुकानदारों एवं ग्राहकों की आर्थिक स्थितियों, समस्याओं और सहुलियतों को जानते हैं। • उत्पादकों के विभिन्न श्रेणियों को जानते हैं। • उत्पादन से जुड़ी विभिन्न समस्याओं को जानते हैं।	• शिक्षक बच्चों से पाठ्यपुस्तक में दिए गए बाजार और बाजार के प्रकारों की चर्चा कर सकते हैं। • दुकानदारों तथा ग्राहकों की वित्तीय, सामाजिक, प्रतिस्पर्धात्मक समस्याओं और सहुलियतों पर सामूहिक चर्चा की जा सकती है। • फसल उत्पादन की लागत, मजदूरों की समस्या, विपणन की समस्या आदि से जुड़ी बातों की चर्चा कर सकते हैं। • थोक व्यापारी एवं खुदरा व्यापारी में	

		• थोक एवं खुदरा व्यापारीयों की भूमिका जानते हैं। • मखाना के बारे में जानते हैं। नोट– पाठ 12 'सड़क सुरक्षा उपाय' से बच्चों को कक्षा 6 में अवगत कराया गया है।	अन्तर बता सकते हैं। • पाठ के आधार पर मखाना उत्पादन के विभिन्न चरणों की जानकारी दे सकते हैं। • पाठ के आधार पर बच्चों के साथ फसल का मंडियों तक के सफर को चरणबद्ध तरीके से चर्चा कर सकते हैं। • न्यूनतम समर्थन मूल्य का अर्थ तथा इसकी आवश्यकता की चर्चा कर सकते हैं। • बिहार के मानचित्र में प्रमुख फसल उत्पादक क्षेत्रों को बच्चों से गतिविधि चिह्नित करायी जा सकती है।	5 कार्य दिवसों में

सामाजिक विज्ञान

लेखन

नाम	विद्यालय/संस्थान का नाम
डॉ0 रत्ना घोष	प्राचार्य (सेवानिवृत्त), डायट, गया
अरबिंद कुमार	एम0 एस0 गुरारू मिल, गया
ज्ञान रंजन	इंटर स्तरीय प्रवेशिका विद्यालय, शकूराबाद, जहानाबाद
नाहिदा प्रविण	यू0 एम0 एस0 खासपुर नौबतपुर
अंजनी कुमार	एम0 आर0 माला बालिका म0 वि0, गया
सीमा कुमारी	अनुग्रह नारायण सर्वोदय उच्च विद्यालय उसफा, पटना
रवि रंजन	एम0 एस0 एस0 डी+2 उच्च वि0, चक्की, बक्सर
अविनाष कुमार पांडेय	मध्य विद्यालय थनुआ, रोहतास
मो0 इमाम अली अंसारी	म0 वि0 नथुनी अहीर के डेरा डुमराँव, बक्सर
डॉ0 मनीषा प्रियम्बदा	डायट, दीघी, वैशाली
संगीता कुमारी	पटना हाई स्कूल, गर्दनीबाग, पटना
डॉ0 नवीन प्रसाद	एस0 बी0 एम0+2 मनदील, जहानाबाद
डॉ0 राकेश चन्द्र प्रसाद राय	शहीद रामानन्द+2 उच्च विद्यालय लखना, पटना

अकादमिक सहयोग–राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार के संकाय सदस्य

- डॉ0 किरण शरण, संयुक्त निदेशक (डायट)–सह–विभाग प्रभारी भाषा एवं सामाजिक विज्ञान विभाग
- डॉ0 रश्मि प्रभा, विभाग प्रभारी, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग
- डॉ0 रीता राय, विभाग प्रभारी, अध्यापक शिक्षा विभाग
- डॉ0 वीर कुमारी कुजूर, विभाग प्रभारी, शिक्षण शास्त्र, पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन विभाग
- श्री राम विनय पासवान, विभाग प्रभारी, दूरस्थ शिक्षा विभाग
- डॉ0 स्नेहाशीष दास, विभाग प्रभारी, विद्यालयी शिक्षा विभाग
- डॉ0 राधे रमण प्रसाद, विभाग प्रभारी, शारीरिक, कला एवं क्राफ्ट विभाग
- डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद मंडल, विभाग प्रभारी, शोध, योजना एवं नीति विभाग

- श्री तेजनारायण प्रसाद, व्याख्याता, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग
- डॉ0 अर्चना, प्रभारी, शिक्षा मनोविज्ञान विभाग
- श्रीमती विभा रानी, समन्वयक जनसंख्या शिक्षा कोषांग
- श्रीमती आभा रानी, सम्प्रति व्याख्याता, एस0 सी0 ई0 आर0 टी0., पटना